

## Unit 04 . बालक में विकार एवं स्वास्थ्य समस्याएं

### (Disorders and Health Problems of a Child)

Q. प्री-मैच्योर बेबी अथवा अपरिपक्व शिशु अथवा परिपक्वता पूर्व शिशु क्या है? इसके कारण, लक्षण व जटिलताएं लिखिए।

अपरिपक्व शिशु के जन्म के तुरंत बाद की देखभाल समझाइए।

**What is premature infant?**

**Write its causes, symptoms and complications. Describe the immediate care of premature baby.**

उत्तर- अपरिपक्व शिशु (The Premature Infant)

गर्भावस्था के 37 सप्ताह पूर्ण होने से पूर्व जन्म लेने वाले शिशु अपरिपक्व शिशु कहलाते हैं।

कारण (Causes)

1. अज्ञात कारण

2. गर्भस्थ शिशु से संबंधित कारक

- गुणसूत्रीय असामान्यताएं

- शारीरिक असामान्यताएं

3. माता से संबंधित कारक

- कुपोषण

- मधुमेह

- पीलिया

- दीर्घकालिक रोग जैसे- हृदय व गुर्दा रोग

- गर्भावस्था की जटिलताएं
- झिल्ली का समय से पूर्व फटना
- एकाधिक शिशुजन्म
- रक्तस्राव
- औषधियों का गलत उपयोग आदि

#### लक्षण (Symptoms) -

- रुएंदार शरीर
- आकार व वजन में कम
- बहुत पतली व झुर्रीदार त्वचा
- कोमल नाखून
- शरीर की अपेक्षाकृत बड़ा सिर
- कमजोर कर्ण उपास्थि
- अविकसित लघु भ्रगोष्ठ
- कमजोर प्रतिवर्त (Reflexes)

#### जटिलताएँ (Complications) -

- संक्रमण
- अश्वसन
- हाइपोग्लाइसीमिया
- हाइपोकैल्सीमिया

- अति बिलिरुबिन रक्तता (Hyperbilirubinemia)
- हेलाइन मैम्ब्रेन रोग

जन्म के तुरंत बाद देखभाल (Immediately Care after Birth) -

### 1. वातावरण (Environment)

कमरे का तापमान 25°-30° होना चाहिए।

शिशु की नाल काटने के बाद मुख व ग्रसनी को कोमलता से साफ करने के तत्काल बाद उसे अत्यंत कोमलता से उठाना चाहिए व गर्म कंबल से ढंक कर रखना चाहिए अथवा गर्म पालना जिसे इनक्यूबेटर कहा जाता है उसमें रखा जाना चाहिए।

### 2. श्वसन (Respiration)

शिशु के जन्म के उपरांत उसकी श्वास क्रिया को आरंभ कराना एक महत्वपूर्ण कार्य है। शिशु का सिर शरीर से थोड़ा नीचे बायीं तरफ मुड़ा होना चाहिए व जीभ को पीछे लुढ़कने से रोकना चाहिए।

नर्स को एक कोमल रबर की नली की सहायता से मुंह व नासाग्रसनी में उपस्थित द्रव का चूषण करना चाहिए। यदि नवजात श्वास लेने में अक्षम हो तो कृत्रिम रूप से श्वास देनी चाहिए।

### 3. ऑक्सीजन देना (Oxygen Administration)

यदि शिशु का शरीर ऑक्सीजन की कमी से नीला पड़ने लगे या वह स्वयं श्वसन क्रिया करने में सक्षम न हो तो तुरंत 1 लीटर प्रति मिनट की दर से ऑक्सीजन देनी चाहिए।

### 4. औषधि देना (Medicine Administration) -

- रक्तस्राव की स्थिति से बचने के लिए विटामिन 'के' का इंजेक्शन दिया जाता है।
- अगर माता को मोर्फिन (morphine) अथवा कोडीन (codeine) दिया गया हो जिससे

नवजात को श्वसनावरोध हो रहा हो तो शिशु को नैलॉर्फिन हाइड्रोक्लोराइड देना चाहिए।

- रक्त में एसिड की मात्रा कम करने के लिए सोडियम बाइकार्बोनेट इंजेक्शन दिया जाता है।

Answer- The Premature Infant: Babies born before the completion of 37 weeks of pregnancy are called premature babies.

### Causes

1. Unknown cause

2. Factors related to the fetus

- Chromosomal abnormalities
- Physical abnormalities

3. Factors related to mother

- malnutrition
- diabetes
- Jaundice
- Chronic diseases like heart and kidney disease
- Pregnancy Complications
- premature rupture of membranes
- Multiple births
- bleeding
- misuse of medicines etc.

Symptoms -

- hairy body
- Less in size and weight
- very thin and wrinkled skin
- Soft nails
- head larger than body
- weak ear cartilage
- Underdeveloped labia minora
- Weak reflexes

#### Complications -

- Infection
- respiration
- hypoglycemia
- hypocalcemia
- Hyperbilirubinemia
- Haline membrane disease

#### Immediate Care after Birth -

##### 1. Environment:

The room temperature should be 25°-30°.

After cutting the umbilical cord of the baby, after gently cleaning the mouth and pharynx, he should be picked up very gently and covered

with a warm blanket or kept in a warm cradle called an incubator.

## 2. Respiration:

Starting the baby's breathing process after birth is an important task.

The baby's head should be slightly turned towards the left below the body and the tongue should be prevented from rolling back.

The nurse should suction the fluid present in the mouth and nasopharynx with the help of a soft rubber tube.

If the newborn is unable to breathe, artificial respiration should be given.

## 3. Giving Oxygen (Oxygen Administration)

If the baby's body starts turning blue due to lack of oxygen or he is not able to do respiration on his own, then oxygen should be given immediately at the rate of 1 liter per minute.

## 4. Giving medicine (Medicine Administration) -

- To avoid bleeding conditions, injection of Vitamin 'K' is given.
- If the mother has been given morphine or codeine which causes respiratory arrest in the newborn.
- If it is present then nalorphine hydrochloride should be given to the child.
- Sodium bicarbonate injection is given to reduce the amount of acid in the blood.

**Q. लो-बर्थ वेट बेबी अथवा कम वजन जन्मा शिशु क्या है?**

**इसके कारण, लक्षण व जटिलताएं लिखिए।**

**लो-बर्थ वेट बेबी के जन्म के तुरंत बाद की देखभाल समझाइए।**

**What is low birth weight baby?**

**Write its causes, symptoms and complications.**

**Describe the immediate care of low birth weight baby.**

**उत्तर- कम वजन वाला जन्मा शिशु (Low Birth Weight Baby)**

ऐसा शिशु जिसका वजन जन्म के समय 1500-2500 ग्राम तक होता है लो बर्थ वेट बेबी कहलाता है।

बहुत कम वजन वाला जन्मा शिशु (Very Low Birth Weight Baby) ऐसा शिशु जिसका वजन जन्म के समय 1500 ग्राम से भी कम होता है वैरी लो बर्थ वेट बेबी कहलाता है।

**जटिलताएं (Complications) -**

- पोषण में कठिनाई
- ऑक्सीजन की कमी
- मानसिक समस्याएं
- निर्जलीकरण
- श्वसन रोग
- अल्प शर्करारक्तता
- श्रवण शक्ति का हास
- कारण, लक्षण व जन्म के तुरंत बाद की देखभाल अपरिपक्व शिशु के जैसे ही होती है। (प्रश्न संख्या 1 देखें)।

Answer: Low Birth Weight Baby: A baby whose weight at birth is 1500-2500 grams is called low birth weight baby.

Very Low Birth Weight Baby: A baby whose weight is less than 1500 grams at the time of birth is called very low birth weight baby.

Complications -

- Difficulty in nutrition
- lack of oxygen
- mental problems
- Dehydration
- Respiratory disease
- Hypoglycemia
- Hearing loss

The causes, symptoms and care immediately after birth are the same as that of a premature baby.

**कंगारु मातृरक्षा को परिभाषित कीजिए।**

**Define Kangaroo Mother Care (KMC).**

**उत्तर-** कंगारु मातृरक्षा (Kangaroo Mother Care)

कंगारु मातृरक्षा को त्वचा से त्वचा का संपर्क (skin to skin contact) भी कहा जाता है।

इस तकनीक का उपयोग अधिकांश प्री टर्म व कम वजन वाले शिशु के लिए किया जाता है।

कंगारु मातृरक्षा का मुख्य उद्देश्य शिशु को एकनिष्ठ स्तनपान कराना, मां व बच्चे के बीच भावनात्मक संबंध मजबूत करना व अस्पताल से जल्दी छुट्टी प्राप्त करना है।



इसमें शिशु को माता त्वचा के संपर्क द्वारा अपने वक्ष से लगाकर रखती है।

इससे शिशु का संक्रमण से बचाव होता है व शिशु के तापमान, श्वसन दर, मस्तिष्कीय हलचल का अवलोकन भी होता है।

विशेष परिस्थितियों में पिता द्वारा भी इस देखभाल को अपनाया जाता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा कंगारु मातृरक्षा को लागू किया गया व इसके उपयोग द्वारा शिशु मृत्युदर में कमी आई है।

अस्पताल जनित संक्रमण जोखिम में कमी आयी है व स्तनपान एवं शिशु के वजन बढ़ने में के.एम.सी. की उपयोगिता सिद्ध हुई है।



Answer- Kangaroo Mother Care

Kangaroo mother care is also called skin to skin contact.

This technique is mostly used for pre-term and low birth weight babies.

The main objective of Kangaroo Maternal Care is to ensure exclusive breastfeeding of the baby, strengthen the emotional bond between mother and child and get early discharge from the hospital. In this, the mother holds the baby close to her breast through skin-to-skin contact.

This protects the baby from infection and also allows observation of the baby's temperature, respiratory rate and brain activity. In special

circumstances this care is also adopted by the father.

Kangaroo Maternal Protection was implemented by the World Health Organization and its use has reduced infant mortality.

There has been a reduction in the risk of hospital-borne infections and KMC has helped in increasing breastfeeding and baby weight. Its usefulness has been proven.

**Q. अतिसार किसे कहते हैं? इसके कारण, लक्षण, जांच, उपचार व नर्सिंग प्रबन्धन लिखिए**

**What is diarrhoea? Write down its causes, sign and symptoms, treatment and nursing management.**

**उत्तर- अतिसार (Diarrhoea)-**

यह कब्ज के विपरीत होता है इसमें मल पतला हो जाता है। कई बार मल त्याग करते-करते रोगी बहुत परेशान हो जाता है।

आँतों द्वारा द्रव का अवशोषण कार्य सही ढंग से न हो पाने के कारण अतिसार या डायरिया की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इसे जठरान्त्र-शोथ (gastroenteritis) भी कहते हैं।

**कारण (Causes)**

- वायरस (virus) जैसे- रोटोवायरस एन्ट्रोवायरस इन्फ्ल्यूएंजा वायरस मीजल्स वायरस
- जीवाणु (bacteria) जैसे- E-coli, Shigella, Salmonella, Staphylococcus आदि।
- कृमि संक्रमण (Worms Infection) फौता, पिन, गोल-कृमि संक्रमण
- कवक (Fungi) - कैण्डिडा एल्बीकेन्स
- आंत्रिय संक्रमण (intestinal infection, enteritis)
- भोजन विषाक्तता (food poisoning)

- कुछ औषधियों के अनुषंगी प्रभाव के कारण (side effect of any medicine)
- विरेचकों का दुरुपयोग (abuse of cathartics)
- आँतों द्वारा जल का अवशोषण न हो पाना
- कोलोन की बीमारी या ऑपरेशन आदि

### लक्षण (Symptoms)

- पेट में ऐंठन होना
- बार-बार पतले दस्त होना
- कमजोरी व थकान होना
- पानी की कमी होना (Dehydration)
- मल क्षेत्र में जलन (Burning sensation)
- बेचैनी, दुर्बलता (Fatigue)
- मितली, उल्टी (Nausea, vomiting)

### जाँच (Investigation) -

1. Stool examination and culture
2. Serum electrolyte
3. Serum pH value and blood

### उपचार (Treatment)

1. पुर्नजलीकरण (Rehydration)

अतिसार ग्रस्त बालक के प्रबंध में नर्स के रूप में आपकी जिम्मेदारी जितना जल्दी सम्भव हो पुनर्जलीकरण करना होता है।

पुनर्जलीकरण का प्रकार डिहाइड्रेशन के स्तर तथा गम्भीरता पर निर्भर करता है।

कम घातक मामलों में केवल मुख द्वारा दिया जाने वाला पुनर्जलीकरण घोल (ORS) दिया जाना चाहिए। ORS के एक पैकेट से एक बार में एक लीटर स्वच्छ पानी में घोल बना लिया जाता है।

फिर इसे 24 घंटे तक बच्चे को पिलाते रहें। 24 घंटे होने के बाद शेष घोल फेंक देना चाहिए। WHO-ORS फार्मूल में निम्न पदार्थ होते हैं-

सोडियम.	3.5 ग्राम
सोडियम बाइकार्बोनेट.	2.5 ग्राम
पोटेशियम क्लोराइड.	1.5 ग्राम
ग्लूकोज.	20 ग्राम

## 2. घरेलू परिस्थितियों में (At Home)

यदि समय पर आवश्यक उपचार उपलब्ध न हो तो घर पर एक छोटा चम्मच शक्कर, एक चुटकी नमक, आधा लीटर पानी एवं आधा नीबू मिलाकर घोल तैयार कर लें और बच्चे को दें।

चावल का मांड, नारियल पानी, छाछ नमक डालकर दे सकते हैं लेकिन ध्यान रहे कि इससे बच्चे को उल्टी न हो।

यदि बच्चे को उल्टी हो रही है एवं साधारण या साधारण से गम्भीर डीहाइड्रेशन हो तो अंतशिराभ (intravenous) मार्ग के द्वारा तरल पदार्थ दिए जा सकते हैं। इसमें 5% ग्लूकोज, ग्लूकोज सलाइन (DNS) एवं रिंगर लैक्टेट सॉल्यूशन दिए जा सकते हैं।

## 3. तरल की मात्रा का निर्धारण (Calculation of Fluid)

कम तीव्रता के निर्जलीकरण में 50 ml/kg, मध्यम तीव्रता के निर्जलीकरण में 100 ml/kg

एवं गम्भीर निर्जलीकरण में 150 ml/kg तरल द्वारा हानि की मात्रा को पूरा किया जा सकता है।

प्रत्येक पतले दस्त के लिए 100 ml/kg की अतिरिक्त द्रव मात्रा दिए जाने वाले तरल में जोड़ी जानी चाहिए।

#### 4. विशिष्ट प्रतिजैविक उपचार (Specific Anti-microbial Treatment)

चिकित्सक के आदेशानुसार एन्टी डायरियल दवाई (anti-diarrhoeal), एन्टीस्पाजमोडिक (antispasmodic drugs) बालक की उम्र व उसके वजन के अनुसार दें।

अतिसार में नर्सिंग देखभाल (Nursing Care in Diarrhoea) -

1. मरीज को ज्यादा से ज्यादा पानी पिलाते रहें जैसे ORS का घोल आदि।
2. मरीज को पानी की कमी न होने दें।
3. यदि उल्टी हो रही हो तो उसकी मात्रा, प्रकृति एवं उसकी आवृत्ति को नोट करें।
4. मरीज को पर्याप्त मात्रा में पोषण एवं द्रव और इलेक्ट्रोलाइट्स (electrolytes) दें।
5. मरीज को मिर्च मसाले युक्त एवं अधिक गर्म व अधिक ठंडा भोजन न दें।
6. मरीज को ज्यादा से ज्यादा विश्राम करने दें।
7. मरीज को मनोवैज्ञानिक सहारा प्रदान करें।
8. मरीज की पैरीनियल (perineal) देखभाल करें।
9. मरीज को पर्याप्त मात्रा में fluid and electrolytes देते रहें।
10. बालक को बैडपेन या कमोड की सुविधा प्रदान करें।
11. बालक की त्वचा की देखभाल करते रहें।
12. Input output का चार्ट बनाकर रिकॉर्ड रखें।

13. बच्चे की हालत में सुधार होने पर उसे हल्का भोजन खाने को दें।

Answer- Diarrhea-

This is the opposite of constipation in which the stool becomes thin. Many times the patient becomes very distressed while passing stool.

Diarrhea occurs due to the intestines not absorbing fluid properly. It is also called gastroenteritis.

Causes

- Viruses like- Rotavirus, Enterovirus, Influenza virus, Measles virus
- Bacteria like- E-coli, Shigella, Salmonella, Staphylococcus etc.
- Worms Infection: Fouta, Pin, Roundworm Infection
- Fungi – Candida albicans
- Intestinal infection, enteritis
- food poisoning
- Due to side effects of some medicines (side effect of any medicine)
- Abuse of cathartics
- inability to absorb water through intestines
- Colon disease or operation etc.

Symptoms

- stomach cramps

- frequent loose stools
- Weakness and fatigue
- Dehydration
- Burning sensation in the stool area
- Fatigue
- Nausea, vomiting

Investigation -

1. Stool examination and culture
2. Serum electrolyte
3. Serum pH value and blood

Treatment

1. Rehydration:

In the management of a child suffering from diarrhea, your responsibility as a nurse is to rehydrate as quickly as possible.

The type of rehydration depends on the level and severity of dehydration.

In less severe cases, only oral rehydration solutions (ORS) should be given. One packet of ORS is dissolved in one liter of clean water at a time. Then keep feeding it to the child for 24 hours.

After 24 hours the remaining solution should be thrown away. WHO-ORS formula contains the following substances-

sodium.	3.5 grams
sodium bicarbonate.	2.5 grams
potassium chloride.	1.5 grams
glucose.	20 grams

## 2. At Home:

If necessary treatment is not available on time, one teaspoon at home Prepare a solution by mixing sugar, a pinch of salt, half liter water and half a lemon and give it to the child.

You can give rice starch, coconut water, buttermilk mixed with salt but keep in mind that it should not cause vomiting in the child.

If the child is vomiting and has moderate or moderate to severe dehydration, fluids can be given intravenously. In this, 5% glucose, glucose saline (DNS) and Ringer lactate solution can be given.

## 3. Calculation of fluid:

In low intensity dehydration, 100 ml/kg in moderate intensity dehydration and 150 ml/kg in severe dehydration can compensate for the loss.

For each diluted diarrhea additional fluid volume of 100 ml/kg should be added to the fluid given.

## 4. Specific Anti-microbial Treatment:

Give anti-diarrheal medicines, antispasmodic drugs as per the doctor's



orders, according to the age and weight of the child.

### Nursing Care in Diarrhea -

1. Keep giving as much water as possible to the patient like ORS solution etc.
2. Do not let the patient suffer from dehydration.
3. If vomiting occurs, note its quantity, nature and frequency.
4. Give adequate nutrition, fluids and electrolytes to the patient.
5. Do not give the patient food containing chillies, spices or too hot or too cold food.
6. Let the patient rest as much as possible.
7. Provide psychological support to the patient.
8. Provide perineal care to the patient.
9. Keep giving adequate amount of fluid and electrolytes to the patient.
10. Provide the child with the facility of bedpan or commode.
11. Keep taking care of the child's skin.
12. Make a chart of input output and keep records.
13. When the child's condition improves, give him light food.

**Q. वमन किसे कहते हैं? इसके कारण एवं प्रबंध का वर्णन कीजिए।**

**What is vomiting? Describe its causes and management.**

**उत्तर- वमन (Vomiting)**

वमन आमाशयिक पदार्थों को ग्रासनली और मुँह से बाहर फेंकने की एक प्रतिवर्ती क्रिया है।

कारण (Causes) - उल्टी या वमन आने के निम्नलिखित कारण होते हैं-

- भोजन विषाक्तता (Food poisoning)
- भावनात्मक तनाव जैसे- डर (Emotional stress such as fear)
- आहार नली में अवरोध होना (Blockage in alimentary tract)
- संक्रमण (Infection)
- प्रतिवर्ती वमन (Reflex vomiting)
- उपापचयी विकार (Metabolic disorder)
- आमाशयी क्षोभण (Gastric irritation)
- इन्ट्राक्रेनियल टेन्शन में वृद्धि होना (Increasing in intracranial tension)

प्रबंध (Management)

1. सबसे पहले वमन के कारणों का पता लगाएं।
2. वमन रोधक दवाइयाँ (antiemetic drug) जैसे- stemetil देनी चाहिए।
3. यदि अवरोधक (obstruction) के कारण वमन (vomiting) हो रही है तो बच्चे को मुँह से खाने को कुछ भी न दें और naso-gastric tube से चूषण (aspiration) करना चाहिए।
4. निर्जलीकरण की जाँच करें एवं द्रव व इलेक्ट्रोलाइट संतुलन को बनाएं रखें।

Answer: Vomiting Vomiting is a reflex action of throwing the gastric contents out of the esophagus and mouth.

Causes - There are following reasons for vomiting or vomiting-

- Food poisoning
- Emotional stress such as fear
- Blockage in alimentary tract
- Infection
- Reflex vomiting
- Metabolic disorder
- Gastric irritation
- Increasing in intracranial tension

## Management

1. First find out the cause of vomiting.
2. Antiemetic drugs like stemetil should be given.
3. If vomiting is occurring due to obstruction, do not give the child anything to eat by mouth and suction should be done through the nasogastric tube.
4. Check for dehydration and maintain fluid and electrolyte balance.

**Q. मुखपाक या मुखव्रण क्या है? इसके लक्षण व उपचार समझाइए।**

**What is thrush or moniliasis or oral candidiasis? Describe its symptoms and treatment.**

**उत्तर- मुखपाक या मुखव्रण (Thrush)**

यह एक फंगल संक्रमण है जो कैन्डिडा एलबीकन्स (Candida albicans) के द्वारा होता है। शिशु शुरु के 3-4 दिन ठीक से पोषण लेने के बाद अगर पोषण के प्रति अनिच्छा प्रकट करता

है तो मुखपाक इसका कारण हो सकता है।

### कारण (Causes)

- जन्म के समय मां को वैजाइनल संक्रमण (vaginal infection)
- संक्रमित नवजात
- संक्रमित बोतल से



### लक्षण (Sign and Symptoms)

- प्रदाह (inflammation) के लक्षण
- जीभ के किनारे पर घाव
- गालों के अंदर की ओर, मसूड़ों पर, तालु पर तथा जीभ पर भूरे-सफेद रंग के चकत्ते

### उपचार (Treatment)

मुखपाक में घावों पर निस्टैटिन क्रीम (nystatin cream) लगाई जाती है।

पूरे शरीर में संक्रमण होने पर amphotericin आई.वी. मार्ग द्वारा दिया जाता है।

### नर्सिंग देखभाल (Nursing Care)

1. स्वच्छता को बनाए रखना चाहिए।
2. मां को उचित स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करनी चाहिए।
3. बच्चे का पोषण व देखभाल करने से पूर्व हाथ अच्छी तरह से साबुन से धोने चाहिए।
4. बोतल द्वारा पोषण देने से पूर्व बोतल को विसंक्रमित करना चाहिए।

Answer- Thrush is a fungal infection caused by *Candida albicans*.

If the baby shows reluctance towards nutrition after taking proper nutrition for the first 3-4 days, mouthwash may be the reason for this.

### Causes

- Vaginal infection of the mother at the time of birth
- infected newborn
- from an infected bottle

### Signs and Symptoms

- Wound on the edge of the tongue
- Brown-white rashes on the inside of the cheeks, gums, palate and tongue

### Treatment:

Nystatin cream is applied on the sores in the mouth. In case of infection in the whole body, amphotericin IV. Is given by route.

## Nursing Care

1. Cleanliness should be maintained.
2. The mother should be provided with proper health education.
3. Hands should be washed thoroughly with soap before feeding and taking care of the child.
4. Before giving nutrition through bottle, the bottle should be sterilized.

**Q. ऑफ्थैलमिया नीयोनेटोरम या नेत्रश्लेष्मकलाशोथ क्या है? समझाइए।**

**What is ophthalmia neonatorum? Describe it.**

**उत्तर-** ऑफ्थैलमिया नीयोनेटोरम (Ophthalmia Neonatorum)

नवजात शिशु के जन्म से 21 दिनों के भीतर आंखों से कोई भी पस युक्त स्राव (purulent discharge) निकलना ऑफ्थैलमिया नीयोनेटोरम कहलाता है।

इसमें शिशु की दानों आंखें लाल भी हो जाती हैं।

**जीवाणु कारक (Causative Organism)**

- E. coli
- Staphylococcus aureus
- Bacillus proteus
- Neisseria gonorrhoeae
- Chlamydia trachomatis

इनमें से गोनोकोकल ऑफ्थैलमिया (gonococcal ophthalmia) सबसे अधिक गंभीर व अंधता का कारण होता है।

## लक्षण (Signs and Symptoms)

- आंखें लाल होना
- आंखों से मवाद युक्त स्राव निकलना
- आंखों से पानी बहना
- पलकें सूज जाना

## निदान (Diagnosis) -

- आंखों के स्राव में एक swab भिगोया जाता है व उसे culture एवं antibiotic sensitivity परीक्षण के लिए भेजा जाता है।

## उपचार (Treatment)

1. संक्रमित आंखों को नॉर्मल सलाइन में भीगी साफ रूई (swab) से साफ किया जाता है।
2. स्वाब को सिर्फ एक ही बार उपयोग में लेना चाहिए।
3. आंखों को अंदर से बाहर की ओर साफ करना चाहिए।
4. आंखों में निर्देशित एन्टीबायोटिक दवाई डाली जाती है।
5. शिशु की देखभाल से पहले एवं बाद में उचित प्रकार से हाथ धोने चाहिए।
6. गोनोकोकल ऑफ्थैलमिया में पेनिसिलिन antibiotic drug of choice होती है।

## Answer- Ophthalmia Neonatorum:

Any purulent discharge from the eyes within 21 days of the birth of a newborn baby is called Ophthalmia Neonatorum. In this, the baby's eyes also become red.

## Causative Organism

- E. coli
- Staphylococcus aureus
- Bacillus proteus
- Neisseria gonorrhoeae

Chalmydia trachomatis Of these, gonococcal ophthalmia is the most serious and causes blindness.

## Signs and Symptoms

- red eyes
- Discharge containing pus from the eyes
- watery eyes
- Swollen eyelids

## Diagnosis -

- A swab is soaked in eye secretions and sent for culture and antibiotic sensitivity testing.

## Treatment

1. Infected eyes are cleaned with a clean cotton swab soaked in normal saline.
2. The swab should be used only once.



3. Eyes should be cleaned from inside to outside.
4. Prescribed antibiotic medicine is put into the eye.
5. Hands should be washed properly before and after taking care of the baby.
6. Penicillin is the antibiotic drug of choice in gonococcal ophthalmia.

Q. नवजात अल्प रक्त शर्करा न्यूनता क्या है? इसके कारण, लक्षण व प्रबंधन समझाइए।

**What is neonatal hypoglycemia? Describe its causes, symptoms and management.**

उत्तर- नवजात अल्प रक्त शर्करा न्यूनता (Neonatal Hypoglycemia) -

एक परिपक्व नवजात शिशु के रक्त में ग्लूकोज का स्तर 40 mg/dL से कम व अपरिपक्व (प्री टर्म) नवजात शिशु में 30 mg/dL से कम हो जाने की स्थिति अल्प रक्त-शर्करा न्यूनता कहलाती है। यह यकृत में ग्लूकोज के बनने की प्रक्रिया की असफलता के कारण होता है।

कारण (Causes) -

- अल्पताप (Hypothermia)
- श्वसन में कष्ट (Dyspnea)
- संक्रमण (Infection)
- यकृत शोथ (Hepatitis)
- रक्त में इंसुलिन का स्तर अधिक होना (Increased insulin level in blood)

लक्षण (Symptoms) -

- शरीर में कंपन, झटके तथा ऐंठन होना

- बेहोशी
- देहनीलता
- अश्वसन
- आंखें घूमना
- कमजोर व ऊँची आवाज में रोना

### निदान (Diagnosis)

- रक्त में ग्लूकोज स्तर को जांचना

### प्रबंधन (Management)

1. ग्लूकोज का अंतःशिरिय आधान (IV transfusion) कराएं।
2. जन्म के बाद से शिशु को आरंभिक स्तनपान देना प्रारंभ करना चाहिए।  
यदि किसी कारणवश स्तनपान निषेद्ध हो तो उसे कृत्रिम पोषण देना प्रारंभ करना चाहिए।

### नर्सिंग प्रबंधन (Nursing Management) -

1. शिशु को ठंड से बचा कर रखना चाहिए।
2. शिशु की शारीरिक स्थिति के अनुसार उसकी समस्याओं को पहचानना चाहिए।
3. शीघ्र स्तनपान एवं पोषण तकनीकों को समय से आरंभ करना चाहिए।
4. शिशु को दिए जाने वाले ग्लूकोज की प्रत्येक घंटे पर जांच करें।
5. शिशु के जैविक चिन्हों पर निरंतर नजर बनाए रखें।
6. शिशु के स्वास्थ्य सुधार व देखभाल संबंधी शिक्षा परिजनों को प्रदान करें।

## Answer - Neonatal Hypoglycemia -

The condition when the glucose level in the blood of a mature newborn becomes less than 40 mg/dL and in an immature (pre-term) newborn baby is less than 30 mg/dL.

It is called sugar deficiency. This occurs due to failure of the process of glucose formation in the liver.

## Causes -

- Hypothermia
- Dyspnea
- Infection
- Hepatitis
- Increased insulin level in blood

## Symptoms -

- body tremors, jerks and convulsions
- unconsciousness
- corporeality
- Respiration
- rolling eyes
- Crying in a weak and loud voice

## Diagnosis

- Checking glucose level in blood

## Management

1. Get IV transfusion of glucose.
2. Initial breastfeeding should be started after birth. If for some reason breastfeeding is prohibited then artificial nutrition should be started.

## Nursing Management -

1. The baby should be protected from cold.
2. The problems of the child should be identified according to his physical condition.
3. Early breastfeeding and nutrition techniques should be started on time.
4. Check the glucose given to the baby every hour.
5. Keep a constant eye on the biological signs of the baby.
6. Provide education to the family members regarding health improvement and care of the child.

Q. नवजात शिशु कामला या पीलिया क्या है? इसके कारण, चिन्ह व लक्षण, जांच एवं प्रबंधन के बारे में लिखिए।

**What is neonatal jaundice? Write about its causes, sign and symptoms, diagnosis and management.**

## अथवा

अतिबिलिरुबिन रक्तता से आप क्या समझते हैं? इसका प्रबंधन समझाइए।

**What do you understand with hyperbilirubinemia? Describe its management.**

उत्तर- नवजात शिशु कामला या पीलिया (Neonatal Jaundice)

नवजात शिशु के शरीर में रक्त में बिलिरुबिन की अत्यधिक मात्रा इकट्ठा होने को अतिबिलिरुबिल रक्तता कहते हैं जिससे शिशु की त्वचा पीली पड़ जाती है जो नवजात शिशु कामला या पीलिया कहलाती है।

कारण (Causes)

- लाल रक्त कोशिकाओं का जल्दी-जल्दी व अधिक नष्ट होना
- यकृतिय कार्यों की अपरिपक्वता जिससे बिलिरुबिन पर्याप्त मात्रा में रक्त से बाहर नहीं निकल पाता
- रक्त समूहों की असंगतता से इरिथ्रोसाइट्स का क्षय बढ़ना
- Polycythemia

लक्षण (Sign and Symptoms)

- थकावट (Fatigue)
- वमन (Vomiting)
- मूत्र का गहरा रंग (Dark urine)
- मल काला होना (Dark stool)

निदान (Diagnosis) - रक्त परीक्षण जैसे-

- सीरम बिलिरुबिन
- ब्लड ग्रुप एवं RH फैक्टर (मां एवं शिशु दोनों का)
- HB%
- Blood culture
- Liver Function Test (LFT)
- Coomb's test

प्रबंधन (Management) -

### 1. प्रकाश चिकित्सा (Phototherapy)

इसमें शिशु को नीले प्रकाश में खुला छोड़ा जाता है जिससे बिलिरुबिन का प्रकाशभंगुरण हो जाए व त्वचा में जमे अप्रत्यक्ष बिलिरुबिन घुलनशील अहानिकारक पदार्थ में बदल जाए जोकि गुदों द्वारा मूत्र के रास्ते शरीर से उत्सर्जित कर दिया जाता है।

प्रकाश चिकित्सा की समय-सीमा शिशु की अवस्था व रक्त में सीरम बिलिरुबिन के स्तर पर आधारित होती है।

### 2. औषधि (Drugs)

शिशु को कुछ निश्चित औषधि दी जाती हैं जो यकृत कोशिकाओं पर अपने प्रभाव द्वारा glucuronyl transferase एन्जाइम के निर्माण को बढ़ा देती है जो बिलिरुबिन के उत्सर्जन में सहायता करता है।

### 3. प्रतिस्थापन रक्ताधान (Exchange Transfusion)

इससे शिशु में रक्त से बिलिरुबिन को शीघ्रता से बाहर किया जाता है। यह पूर्णकालिक शिशुओं में जब अति बिलिरुबिनता 20 mg/dl तथा अपरिपक्व शिशुओं में बिलिरुबिन स्तर 10-15 mg/dl हो तब प्रयोग किया जाता है।

## नर्सिंग प्रबंधन (Nursing Management)

1. पीलिया की जांच के लिए शिशु के त्वचा के रंग का निरंतर अवलोकन करें कि पीला रंग घट रहा है या बढ़ रहा है।
2. शिशु के मूत्र व मल के रंग, मात्रा और प्रकृति को जांचे व नोट करें।
3. शिशु के जैविक चिन्हों की निरंतर जांच करते रहें।
4. शिशु की संपूर्ण शारीरिक व मानसिक अवस्था का आकलन करें जैसे ऑक्सजीन न्यूनता, अतितापता, न्यूनतापता, हाइपोग्लाइसीमिया तथा संक्रमण आदि।
5. प्रकाश चिकित्सा हेतु शिशु को नग्न अवस्था में नीले प्रकाश के नीचे रखें व उसकी अवस्था बार-बार बदलते रहें ताकि पूरे शरीर पर प्रकाश का प्रभाव पड़े।
6. प्रकाश चिकित्सा के दौरान शिशु की आंखों की रक्षा करें व उन्हें आई-पैड से बैंक दें ताकि रेटिना की क्षति की रोकथाम की जा सके।
7. मल में बिलिरुबिन के निष्कासन हेतु आंशिक पोषण दें।
8. प्रकाश चिकित्सा की अवधि का चार्ट तैयार करें।
9. रक्ताधान प्रतिक्रिया के दौरान संक्रमण की रोकथाम हेतु सख्त एसेप्टिक तकनीक को बनाए रखें।
10. रक्ताधान से पूर्व एवं पश्चात् जैविक चिन्हों को जांचें।
11. शिशु का तापमान निरंतर बगल से जांचें।
12. शिशु को पोषण देने के लिए नीले प्रकाश से निकालें।
13. शिशु के परिजनों को शिशु से मिलाते समय प्रकाश चिकित्सा से निकालकर आंखों से कवच हटा लें।
14. परिवारजनों को पीलिया की रोकथाम के लिए स्तनपान को बढ़ावा देने के लिए शिक्षित करें।

Answer - Neonatal Jaundice: Accumulation of excessive amount of

bilirubin in the blood of a newborn baby is called hyperbilirubinemia due to which the baby's skin turns yellow. It is called jaundice.

### Causes

- rapid destruction of red blood cells
- Immaturity of liver function due to which bilirubin is not removed from the blood in sufficient quantity.
- Increased breakdown of erythrocytes due to blood group incompatibility
- Polycythemia

### Signs and Symptoms

- Fatigue
- Vomiting
- Dark urine
- Dark stool

### Diagnosis – Blood tests like-

- Serum bilirubin
- Blood group and RH factor (of both mother and baby)
- HB%
- Blood culture
- Liver Function Test (LFT)



- Coomb's test

## Management -

### 1. Phototherapy:

In this, the baby is exposed to blue light so that the bilirubin gets photodissolved and the indirect bilirubin deposited in the skin gets converted into a soluble harmless substance which is excreted from the body through the kidneys through urine.

The timing of phototherapy depends on the condition of the baby and the level of serum bilirubin in the blood.

### 2. Medicines:

Certain medicines are given to the child which, by their effect on the liver cells, increases the formation of glucuronyl transferase enzyme which helps in the excretion of bilirubin.

3. Exchange Transfusion: By this, bilirubin is quickly removed from the blood of the baby. It is used when hyperbilirubinemia is 20 mg/dl in full-term infants and 10-15 mg/dl in premature infants.

## Nursing Management

1. To check for jaundice, continuously observe the baby's skin color whether the yellow color is increasing or decreasing.

2. Check and note the colour, quantity and nature of the baby's urine and stool.

3. Keep checking the baby's biological signs continuously.
4. Assess the overall physical and mental condition of the baby such as oxygen deficiency, hyperthermia, hypothermia, hypoglycemia and infection etc.
5. For light therapy, keep the baby in a naked state under blue light and keep changing its position frequently so that the entire body gets affected by the light.
6. Protect the baby's eyes during light therapy and bank them with an iPad to prevent retinal damage.
7. Give initial nutrition for removal of bilirubin in stool.
8. Chart the duration of light therapy.
9. Maintain strict aseptic technique to prevent infection during transfusion reaction.
10. Check biological signs before and after blood transfusion.
11. Check the baby's temperature continuously from the armpit.
12. Remove blue light to nourish your baby.
13. While introducing the baby to the baby's family members, remove them from the light therapy and remove the shield from the eyes.
14. Educate family members to promote breastfeeding to prevent jaundice.

**Q. खसरा क्या है? इसके कारक, प्रसार व उद्भव अवधि लिखिए। इसके लक्षण, निदान, जटिलताएं, रोकथाम, उपचार व नर्सिंग प्रबंधन लिखिए।**

**What is measles? Write its pathogen, transmission and incubation period. Write the symptoms, diagnosis, prevention, treatment and**

## nursing care of measles.

### उत्तर- खसरा (Measles)

खसरा एक संक्रामक रोग है जिसमें सर्वप्रथम ऊपरी श्वसन तंत्र प्रभावित होता है. इसका रोगकारक paramyxovirus होता है। यह रोग मुख्यतः छोटे बच्चों में पाया जाता है।

### रोगकारक एवं प्रसार (Pathogen and Transmission)

खसरे का रोगकारक paramyxovirus होता है एवं यह बिंदुक संक्रमण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सम्पर्क द्वारा प्रसारित होता है।

बिंदुक संक्रमण (droplet infection) में रोगी के खांसने, छींकने या बोलते समय संक्रमित तरल के छोटे बिंदु स्वस्थ व्यक्ति तक पहुंच जाते हैं एवं रोग प्रसारित हो जाता है।

उद्भवन काल (Incubation Period) खसरे की उद्भवन अवधि 10-14 दिन होती है।

यह मुख्यतः 2-5 वर्ष के बालकों को प्रभावित करती है परन्तु कभी भी उत्पन्न हो सकती है।

### लक्षण (Clinical Features)

1. पूर्वावस्था (Prodromal Stage) - यह प्रथम 3-4 दिन तक होती है। इसमें निम्न लक्षण उत्पन्न होते हैं-

- भूख न लगना (Anorexia)
- नाक बहना (Rhinorrhea)
- सिरदर्द (Headache)
- कंजक्टिवाइटिस (Conjunctivitis)
- लसिका गांठें फूलना (Lymphadenopathy)
- त्वचा पर दाने होना (Rashes on skin)
- मुंह की म्यूकोसा पर सफेद, नीला-भूरा दाग (Koplik's spot)

## 2. विस्फोटक अवस्था (Eruptive Phase)

- चकत्ते (Rashes)
- तेज बुखार
- कान के पीछे लाल एवं फफोलेदार मैक्यूल (Macules/papules)

## 3. पुर्नलाभ अवस्था (Poste Eruptive Phase) -

- चकत्ते ठीक होना
- त्वचा का साफ हो जाना

## निदान (Diagnosis)

- शारीरिक परीक्षण
- लक्षणों की उपस्थिति की जांच
- Swabculture test
- Serum antibodies test
- Koplik's spot

## उपचार (Treatment) -

1. बालक को चिकित्सक निर्देशानुसार human measles immunoglobulines administer की जानी चाहिए।
2. बालक का लाक्षणिक प्रबंधन किया जाता है जैसे- Antipyretics, antiemetics, analgesics आदि।

3. किसी भी प्रकार के संक्रमण के लिए एन्टीबायोटिक देनी चाहिए।
4. आहार में अत्यधिक तरल पदार्थ देने चाहिए।

#### रोकथाम (Prevention) -

1. शिशु को 9-12 माह की आयु पर MMR टीका लगवाना चाहिए।
2. यदि किसी शिशु या बालक को measles है तो इसे पृथक (isolation) में रखना चाहिए।
3. बालक से बात करते समय मास्क का उपयोग करना चाहिए।
4. बालक की व्यक्तिगत स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए।

#### नर्सिंग प्रबंधन (Nursing Management)

1. रोगी का तापमान चैक करना चाहिए।
2. डॉक्टर के आदेशानुसार सभी दवाईयां सही समय पर देनी चाहिए।
3. मुंह की देखभाल के लिए एन्टीसेप्टिक सॉल्यूशन का इस्तेमाल करना चाहिए।
4. रोगी को आरामदायक स्थिति प्रदान करनी चाहिए।

#### Answer: Measles

Measles is an infectious disease in which the upper respiratory system is first affected. Its causative agent is paramyxo virus. This disease is mainly found in small children.

#### Pathogen and Transmission:

The causative agent of measles is paramyxo virus and this point

infection is spread through direct or indirect contact.

In droplet infection, small droplets of infected fluid reach the healthy person when the patient coughs, sneezes or speaks and the disease is spread.

Incubation Period:

The incubation period of measles is 10-14 days. It mainly affects children aged 2-5 years but can occur at any time.

## Clinical Features

1. Prodromal Stage – This lasts for the first 3-4 days. The following symptoms arise in this-

- Loss of appetite (Anorexia)
- Runny nose (Rhinorrhea)
- Headache
- Conjunctivitis
- Swelling of lymph nodes (Lymphadenopathy)
- Rashes on skin
- White, blue-gray spot on oral mucosa (Koplik's spot)

2. Eruptive Phase

- Rashes
- high fever
- Red and blistered macules/papules behind the ears

### 3. Post Eruptive Phase -

- rashes heal
- Clearing of skin

### Diagnosis

- physical examination
- Checking for presence of symptoms
- Swabculture test
- Serum antibodies test
- Koplik's spot

### Treatment -

1. Human measles immunoglobulins should be administered to the child as per doctor's instructions.
2. Symptomatic management of the child is done like antipyretics, antiemetics, analgesics etc.
3. Antibiotics should be given for any type of infection.
4. Excessive fluids should be given in the diet.

### Prevention -

1. The child should get MMR vaccine at the age of 9-12 months.
2. If an infant or child has measles then he/she should be kept in

isolation.

3. Mask should be used while talking to the child.
4. Personal hygiene of the child should be taken care of.

### Nursing Management

1. The patient's temperature should be checked.
2. All medicines should be given at the right time as per the doctor's orders.
3. Antiseptic solution should be used for mouth care.
4. The patient should be provided with comfortable conditions.

**Q. गलसुआ या कर्ण पूर्व ग्रंथिशोथ क्या है? इसके लक्षण, जटिलताएँ, उपचार एवं नर्सिंग प्रबंधन लिखिए।**

**What is mumps? Write its symptoms, complications, treatment and nursing management.**

**उत्तर- गलसुआ (Mumps) -**

Paramyxovirus वाइरस के कारण पैरोटिड लार ग्रंथि का संक्रमण एवं प्रदाह कर्ण पूर्व ग्रंथि शोथ या गलसुआ कहलाता है।

**रोगकारक एवं प्रसार (Pathogen and Transmission)**

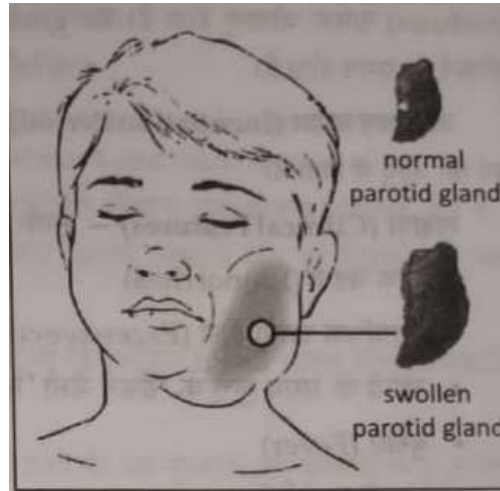
इसका रोगकारक पैरामिक्सो वाइरस (paramyxovirus) होता है।

यह रोगी की लार (saliva) में उपस्थिति होता है एवं ड्रॉपलेट या प्रत्यक्ष संपर्क द्वारा प्रसारित होता है। यह रोग मुख्यतः 2-12 वर्ष के बालकों को अधिक प्रभावित करता है।

**उद्भवन काल (Incubation Period)**



यह प्रायः 14-25 दिन (औसतन 18 दिन) होती है एवं एक बार गलसुआ होने पर जीवन भर इसके प्रतिरक्षा विकसित हो जाती है।



लक्षण (Clinical Features) इसमें निम्न लक्षण उत्पन्न होते हैं-

- शरीर में पेशीय दर्द होना (Myalgia)
- भूख न लगना (Anorexia)
- सिरदर्द (Headache)
- ठंड के साथ तेज बुखार (Fever)
- पैरोटिड ग्रंथि में तेज दर्द (Severe pain in parotid gland)
- अन्य लार ग्रंथियों में प्रदाह (Salivary glands inflammation)

उपचार (Treatment) -

1. बालक को आवश्यकतानुसार analgesics व antipyretics दिए जाते हैं।
2. रोगी को एन्टीबायोटिक दिए जाते हैं।
3. रोगी को पर्याप्त मात्रा में तरल पदार्थ देना चाहिए।
4. यदि रोगी orally fluids लेने में असमर्थ है तो L.V. fluids दिए जाने चाहिए।
6. बच्चे को नमक के पानी से गरारे (gargles) कराने चाहिए।

## रोकथाम (Prevention)

1. Mumps की रोकथाम के लिए शिशु को प्रतिरक्षा हेतु 15 माह की आयु पर टीका (MMR) लगवाना चाहिए।
2. यदि बालकों में कोई mumps से ग्रसित हो तो उसका isolation करना चाहिए।
3. बच्चे द्वारा उपयोग किए गए उपकरण व अन्य सामान उचित तरीके से विसंक्रमित करके उपयोग में लाने चाहिए।
4. बच्चे को उचित प्रकार से हाथ धोने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

## नर्सिंग प्रबंधन (Nursing Management) -

1. यदि बुखार अधिक हो तो रोगी की cold sponging करनी चाहिए।
2. चिकित्सक निर्देशानुसार सभी दवाईयां नियत समय पर देनी चाहिए।
3. बालक को पर्याप्त मात्रा में liquid diet देनी चाहिए।
4. बालक का निरंतर मुख साफ करना चाहिए।
5. बालक को पृथक वार्ड में रखना चाहिए।
6. बालक के जैविक चिन्हों को निरंतर चैक करना चाहिए।

Answer - Mumps - Infection and inflammation of the parotid salivary gland caused by Paramyxo virus is called mumps.

## Pathogen and Transmission:

Its causative agent is paramyxo virus. It is present in the saliva of the patient and is transmitted by droplet or direct contact.

This disease mainly affects children aged 2-12 years.

Incubation period:

It is usually 14-25 days (average 18 days) and once mumps is contracted, immunity develops throughout life.

Symptoms (Clinical Features) The following symptoms arise in this-

- Myalgia
- Loss of appetite (Anorexia)
- Headache
- High fever with chills
- Severe pain in parotid gland
- Salivary glands inflammation

Treatment -

1. Analgesics and antipyretics are given to the child as per requirement.
2. Antibiotics are given to the patient.
3. Adequate amount of fluids should be given to the patient.
4. If the patient is unable to take fluids orally then L.V. fluids should be given.
6. The child should be gargled with salt water.

Prevention

1. To prevent mumps, the child should be given vaccination (MMR) at

the age of 15 months for immunity.

2. If any child is suffering from mumps then he/she should be isolated.
3. The equipment and other items used by the child should be properly disinfected and used.
4. The child should be encouraged to wash hands properly.

Nursing Management -

1. If the fever is high then cold sponging should be done on the patient.
2. All medicines should be given at the prescribed time as per the doctor's instructions.
3. The child should be given liquid diet in sufficient quantity.
4. The child's face should be cleaned regularly.
5. The child should be kept in a separate ward.
6. The child's biological signs should be checked continuously.

**Q. कूकर खाँसी क्या है? इसके कारक, प्रसार व उद्भव अवधि लिखिए।**

**इसके लक्षण, निदान, रोकथाम, उपचार व नर्सिंग प्रबंधन लिखिए।**

**What is whooping cough? Write its pathogen, transmission and incubation period. Write the symptoms, diagnosis, prevention, treatment and nursing care of it.**

**उत्तर- कूकर खाँसी (Whooping Cough)**

काली खाँसी या कूकर खाँसी (whooping cough) जीवाणु जनित संक्रामक रोग है जिसमें श्वसन मार्ग में अत्यधिक चिपचिपे म्यूकस के कारण लगातार खाँसी आती है।

## रोगकारक एवं प्रसार (Pathogen and Transmission)

इसका रोगकारक बॉर्डेटिला परटुटिस (bordetella pertusis) नामक जीवाणु होता है। यह gram negative (Gram-ve) bacteria होता है।

इसका प्रसार बोलने, खांसने या छींकने के समय होता है।

## उद्भवन काल (Incubation Period)

सामान्यतः इसकी उद्भवन अवधि 6-18 दिन मानी जाती है। यह मुख्यतः 2-5 वर्ष की आयु में होती है।

लक्षण (Clinical Features) इसके मुख्य लक्षण निम्न प्रकार हैं-

- नाक बहना (Rhinorrhea)
- अत्यधिक खांसी होना (Excessive cough)
- खांसी के समय कुत्ते के भौंकने जैसी 'बूफ' आवाज (Whoop like sound when coughing)
- बुखार (Fever)
- अत्यधिक बेचैनी (Excessive restlessness)
- उल्टी होना (Vomiting)
- चेहरा लाल होना (Redness of face)

## निदान (Diagnosis)

- लक्षणों की उपस्थिति की जांच
- Blood investigations

- Throat swab culture

### रोकथाम (Prevention)

1. सभी शिशुओं को DT के प्रति immunization कराया जाना चाहिए।
2. रोगी के दैनिक कार्यों के लिए सभी आवश्यक वस्तुएँ अलग रखनी चाहिए।
3. नियत समय पर DPT की बूस्टर डोज देनी चाहिए।

### उपचार (Treatment)

1. बालक को खांसी से आराम दिलाने के लिए कोडीन युक्त cough syrup provide की जानी चाहिए।
2. आवश्यकतानुसार बालक को nebulization भी दिया जाना चाहिए।
4. बालक का SPO<sub>2</sub> स्तर पता करना चाहिए एवं आवश्यकतानुसार O<sub>2</sub> therapy देनी चाहिए।
5. बालक को एन्टिबायोटिक दिए जाते हैं जैसे- Amikacin, erythromycin आदि।
6. आवश्यकतानुसार antipyretics भी दिए जाते हैं जैसे- Paracetamol, acetaminophen

### नर्सिंग प्रबंधन (Nursing Management)

1. किसी रोगी का पता चलते ही उसे isolation में रखना चाहिए।
2. खांसी आने पर रोगी को मुंह पर कपड़ा रखने की सलाह देनी चाहिए।
3. बच्चे को डॉक्टर के निर्देशानुसार सभी दवाईयां समय पर देनी चाहिए।
4. बच्चे को पर्याप्त आराम प्रदान करने के लिए शांत एवं सुरक्षित वातावरण प्रदान करना चाहिए।

5. बच्चे के जैविक चिन्हों को चैक करना चाहिए।

Answer – Whooping Cough

Whooping Cough or Whooping Cough is caused by bacteria Infectious disease in which persistent cough occurs due to excessive sticky mucus in the respiratory tract.

Pathogen and Transmission

Its pathogen Bordetella pertusis (bordetella There is a bacteria called pertussis). This is a gram negative (Gram-ve) bacteria.

It spreads while speaking, coughing or sneezing.

Incubation Period The incubation period is generally considered to be 6-18 days. It occurs mainly at the age of 2-5 years.

Symptoms (Clinical Features) Its main symptoms are as follows-

- Runny nose (Rhinorrhea)
- Excessive cough
- Whoop like sound when coughing
- Fever
- Excessive restlessness
- Vomiting
- Redness of face

## Diagnosis

- Checking for presence of symptoms
- Blood investigations
- Throat swab culture

## Prevention

1. All infants should be immunized against DT.
2. All essential items for the patient's daily activities should be kept separate.
3. Booster dose of DPT should be given at the appointed time.

## Treatment

1. To provide relief to the child from cough, cough syrup containing codeine should be provided.
2. Nebulization should also be given to the child as per requirement.
4. The SPO level of the child should be known and O therapy should be given as per requirement.
5. Antibiotics are given to the child like Amikacin, Erythromycin etc.
6. Antipyretics are also given as per requirement like- Paracetamol, Acetaminophen.

## Nursing Management

1. As soon as a patient is detected, he should be kept in isolation.



2. In case of cough, the patient should be advised to keep a cloth over the mouth.
3. All medicines should be given to the child on time as per the doctor's instructions.
4. A calm and safe environment should be provided to provide adequate rest to the child.
5. The biological signs of the child should be checked.

**Q. डिप्थीरिया क्या है? इसके कारक, प्रसार व उद्भव अवधि लिखिए।**

**इसके लक्षण, निदान, रोकथाम, उपचार व नर्सिंग प्रबंधन लिखिए।**

**What is diphtheria? Write its pathogen, transmission and incubation period. Write the symptoms, diagnosis, prevention, treatment and nursing care of it.**

**उत्तर-** डिप्थीरिया (Diphtheria) यह कोराइनीबैक्टीरियम डिफ्थीरियाई जीवाणु द्वारा उत्पन्न संक्रामक रोग है। यह रोग मुख्य रूप से टॉन्सिल्स, लैरिन्क्स व गले पर आक्रमण कर वहां एक ग्रे-सफेद झिल्ली बनाता है और यह झिल्ली पूरे स्थान में फैल जाती है।

रोगकारक एवं प्रसार (Pathogen and Transmission) गलघोंटू या डिफ्थीरिया रोग का कारण कोराइनीबैक्टीरियम डिफ्थीरियाई (*corynebacterium diphtheriae*) नामक जीवाणु होता है।

उद्भव अवधि (Incubation Period) इसकी अवधि 2-6 दिन होती है। यह मुख्यतः बाल्यावस्था में 3-5 वर्ष की आयु में अधिक होता है।

**लक्षण (Clinical Features)**

- बुखार (Fever)
- गले में खराश (Sore-Throat)

- निगलने में कठिनाई (Dysphagia)
- टॉन्सिल में सूजन (Tonsilledema)
- दम घुटने का अनुभव (Chocking sensation)
- अत्यधिक बैचेनी (Excessive restlessness)
- Oro-pharynx में false membrane का निर्माण होना

### निदान (Diagnosis)

- लक्षणों की उपस्थिति की जांच
- Throat swab culture
- Blood investigations
- शिक परीक्षण (Schick test)

### उपचार (Treatment)

1. रोगी को diphtheria antitoxin serum I.M. या I.V. administer करना चाहिए।
2. संक्रमण के उपचार के लिए एंटीबायोटिक थेरेपी दी जाती है जैसे- Penicillin, erythromycin
3. यदि बुखार हो तो antipyretics भी दिए जाते हैं।
4. आवश्यकतानुसार O, therapy दी जानी चाहिए।

### रोकथाम एवं नियंत्रण (Prevention and Control)

1. सभी शिशुओं को DPT टीके से प्रतिरक्षित करना चाहिए।
2. DPT की बूस्टर डोज भी अवश्य लेनी चाहिए।

3. रोग का पता चलते ही रोगी को isolation में रखा जाता है।

नर्सिंग प्रबंधन (Nursing Management) -

1. बालक को अस्पताल में पृथक वार्ड में रखा जाता है।
2. भोजन में तरल आहार अधिक देना चाहिए।
3. बुखार हो तो कोल्ड स्पॉजिंग करना चाहिए।
4. बालक के उपयोग में आने वाले उपकरण व सामान का उचित विसंक्रमित विधि द्वारा निस्तारण किया जाना चाहिए।
5. डॉक्टर के निर्देशानुसार सभी दवाईयां उचित समय पर देनी चाहिए।
6. आवश्यकता हो तो नम ऑक्सीजन प्रदान करनी चाहिए।
7. बालक को पर्याप्त आरामदायक स्थिति व शांत वातावरण प्रदान करना चाहिए।

Answer: Diphtheria is an infectious disease caused by *Corynebacterium diphtheriae* bacterium. This disease mainly attacks the tonsils, larynx and throat and forms a grey-white membrane there and this membrane spreads all over the place.

Pathogen and Transmission: The cause of diphtheria is a bacterium called *Corynebacterium diphtheriae*.

Incubation period: Its duration is 2-6 days. It occurs mostly in childhood, at the age of 3-5 years.

Clinical Features

- Fever

- Sore-Throat
- Difficulty swallowing (Dysphagia)
- Tonsilledema
- Choking sensation
- Excessive restlessness
- Formation of false membrane in oro-pharynx

### Diagnosis

- Checking for presence of symptoms
- Throat swab culture
- Blood investigations
- Schick test

### Treatment

1. The patient should be given diphtheria antitoxin serum I.M. or I.V. Should administer.
2. Antibiotic therapy is given for the treatment of infection like Penicillin, erythromycin.
3. If there is fever, antipyretics are also given.
4. O therapy should be given as needed.

### Prevention and Control

1. All infants should be immunized with DPT vaccine.
2. Booster dose of DPT must also be taken.
3. As soon as the disease is detected, the patient is kept in isolation.

#### Nursing Management -

1. The child is kept in a separate ward in the hospital.
2. More liquid food should be given in the diet.
3. If there is fever, cold sponging should be done.
4. The equipment and items used by the child should be disposed of by proper disinfection method.
5. All medicines should be given at the appropriate time as per the doctor's instructions.
6. If necessary, moist oxygen should be provided.
7. The child should be provided with adequate comfortable conditions and a calm environment.

**Q. टिटनेस क्या है? इसके कारक, प्रसार व उद्भवन अवधि लिखिए।**

**इसके चिकित्सीय लक्षण, निदान, जटिलताएं, रोकथाम, उपचार व नर्सिंग प्रबंधन लिखिए।**

**What is tetanus? Write its pathogen, transmission and incubation period.**

**Write the clinical features, diagnosis, complications, treatment, prevention and nursing care of tetanus.**

## उत्तर- टिटनेस (Tetanus) -

यह जीवाणु जनित संक्रामक रोग है जिसमें मुख्यतः रोगी का तंत्रिका तंत्र प्रभावित होता है।

### रोगकारक एवं प्रसार (Pathogen and Transmission)

टिटनेस का रोग कारक क्लोस्ट्रीडियम टिटैनाई (clostridium tetani) जीवाणु होता है।

Clostridium tetani के spores शरीर में घाव के मिट्टी या पानी के संपर्क में आने से ये घाव में प्रवेश करके घुलनशील जीवविष उत्पन्न करते हैं।

### उद्भवन काल (Incubation Period) -

यह रोग 2-21 दिन तक रह सकता है।

### चिकित्सीय लक्षण (Clinical Features)

- गर्दन, चेहरे एवं जबड़े की पेशियों में ऐंठन
- धड़कन तेज होना (Tachycardia)
- अत्यधिक पसीना आना (Diaphoresis)
- हल्का बुखार (Low grade fever)
- निगलने में कठिनाई (Difficulty in swallowing)
- जबड़ा मजबूती से बंद होना (Locked jaw)
- शरीर का धनुष की तरह मुड़ना (Opisthotonus position)
- ऐंठन के दौरे आना (Tetanic seizures)
- शरीर में नीलापन (Cyanosis)
- अत्यधिक बेचैनी (Excessive restlessness)

## निदान (Diagnosis) -

- शारीरिक परीक्षण
- लक्षणों की उपस्थिति की जांच
- Wound culture test
- Blood investigations

## उपचार (Treatment)

1. रोगी को ATS (Anti Tetanus Serum) का इंजेक्शन देना चाहिए।
2. रोगी का लाक्षणिक प्रबंधन किया जाता है जैसे- Antipyretics, L.V. Fluids आदि।
3. पेशीय शिथिलक औषधियां देनी चाहिए।

## रोकथाम एवं नियंत्रण (Prevention and Control) -

1. टिटनेस के बारे में लोगों को स्वास्थ्य शिक्षा दी जानी चाहिए।
2. सभी शिशुओं को DPT vaccine द्वारा निर्धारित समयानुसार immunization करना चाहिए।
3. सभी शिशुओं को (5 वर्ष पर) DPT या TT की बूस्टर डोज दी जानी चाहिए।
4. गर्भवती स्त्रियों का टिटनेस का टीकाकरण करना चाहिए। प्रथम टीका गर्भावस्था के 16-18 सप्ताह पर। प्रथम टीके के एक माह बाद द्वितीय टीका।

## नर्सिंग प्रबंधन (Nursing Management)

1. बालक के जैविक चिन्हों को नियमित रूप से चैक करना चाहिए।
2. बालक को आवश्यकतानुसार नम ऑक्सीजन (O) प्रदान करनी चाहिए।

3. बालक को पर्याप्त आराम एवं नींद लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
4. बालक को डॉक्टर के निर्देशानुसार सभी दवाईयां देनी चाहिए।
5. टिटनेस के रोगी को अन्य रोगियों से अलग रखना चाहिए।
6. बालक को आराम से सांस लेने के लिए high fowlers या cardiac position प्रदान करनी चाहिए। इससे फेफड़े विस्तारण आसानी से हो पाता है।

Answer- Tetanus –

It is a bacterial infectious disease in which mainly the nervous system of the patient is affected.

Pathogen and Transmission:

The causative agent of tetanus is Clostridium tetani bacterium.

When the spores of Clostridium tetani come in contact with soil or water from a wound in the body, they enter the wound and produce soluble toxins.

Incubation Period - This disease can last for 2-21 days.

Clinical Features

- Spasms in the muscles of the neck, face and jaw.
- Tachycardia
- Excessive sweating (Diaphoresis)
- Low grade fever
- Difficulty in swallowing



- Locked jaw
- Bending of the body like a bow (Opisthotonus position)
- Tetanic seizures
- Cyanosis in the body
- Excessive restlessness

#### Diagnosis -

- Physical examination
- Checking for presence of symptoms
- Wound culture test
- Blood investigations

#### Treatment

1. The patient should be given injection of ATS (Anti Tetanus Serum).
2. Symptomatic management of the patient is done like- Antipyretics, L.V. Fluids etc.
3. Muscle relaxant medicines should be given.

#### Prevention and Control -

1. Health education should be given to people about tetanus.
2. All infants should be immunized with DPT vaccine as per the schedule.

3. All infants (at 5 years) should be given a booster dose of DPT or TT.
4. Pregnant women should be vaccinated against tetanus. First vaccination at 16-18 weeks of pregnancy. Second vaccine one month after the first vaccine.

### Nursing Management

1. The biological signs of the child should be checked regularly.
2. Moist oxygen (O) should be provided to the child as per requirement.
3. The child should be encouraged to take adequate rest and sleep.
4. All medicines should be given to the child as per the doctor's instructions.
5. Tetanus patient should be kept separate from other patients.
6. The child should be provided high fowlers or cardiac position to breathe comfortably. This allows the lungs to expand easily.

**Q. रैबीज या जलांतक क्या है? इसके कारक, प्रसार व उद्भव अवधि लिखिए।**

**रैबीज के लक्षण, निदान, रोकथाम, उपचार व नर्सिंग प्रबंधन लिखिए।**

**What is rabies? Write its pathogen, transmission and incubation period, Write the symptoms, diagnosis, prevention, treatment and nursing care of rabies.**

**उत्तर- रैबीज (Rabies)**

यह रेब्डोवाइरस (rhabdovirus) जनित संक्रामक रोग है जो केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करता है। यह जानवरों के काटने से फैलता है।

**रोगकारक एवं प्रसार (Pathogen and Transmission) रैबीज का रोगकारक रेब्डो**

वाइरस या लाइसा वाइरस होता है।

इसका प्रसार जंतुओं या चौपायों द्वारा काटने से होता है यह बंदर, कुत्ता, बिल्ली, भेड़िया इत्यादि द्वारा हो सकता है।

उद्भवन काल (Incubation Period) -

इसका उद्भवन काल 1-3 माह हो सकता है। यह पीड़ित की आयु एवं काटने की जगह पर निर्भर करता है।

लक्षण (Clinical Features) -

1. आरंभिक अवस्था (Primary Phase)

- स्थानीय या विकरित दर्द (Local or radiating pain)
- काटने की जगह पर झनझनाहट (Tingling at bite site)
- खुजली (Pruritus)
- हल्का बुखार (Mild fever)
- चिड़चिड़ापन (Irritability)
- प्रकाश से समस्या (Photophobia)
- तेज आवाज के प्रति अधिक ध्यान देना (Sensitivity to loud noises)
- आँख की पुतली विस्तारित होना (Dilation of pupil)
- दिल की धड़कन तेज होना (Tachycardia)

2. उत्तेजित अवस्था (Excitation Phase) –

यह प्रारंभिक लक्षणों के 2-10 दिन में प्रकट होते हैं-

- अत्यधिक विरोध करना (Excessive agitation)
- अत्यधिक बेचैनी (Excessive restlessness)
- लकवा (Paralysis)
- अनियमित धड़कन (Irregular heartbeat)
- बुखार (Fever)
- पानी से डर लगना (Hydrophobia)
- निर्जलीकरण (Dehydration)
- निगलने में कठिनाई होना (Dysphagia)
- मुंह से लार गिरना (Excessive salivation)
- रोगी को दौरे आना (Seizures)

### 3. अंतिम अवस्था (Terminal Phase)

- पक्षाघात (Paralysis)
- लंबी बेहोशी (Coma)
- मृत्यु (Death)

### निदान (Diagnosis)

- Virus isolation
- Blood investigations
- Urine examination

## रोकथाम (Prevention)

1. रैबीज की रोकथाम के लिए आवारा कुत्तों का टीकाकरण करना चाहिए।
2. यदि कोई कुत्ता किसी व्यक्ति को काट ले तो इसे 10 दिन तक निगरानी में अवश्य रखना चाहिए।
3. यदि किसी जानवर में रैबीज के लक्षण हो तो उसे तुरंत अलगाव में रखना चाहिए।
4. जानवर के काटने पर तुरंत टीकाकरण कराना चाहिए एवं बाद में बूस्टर डोज भी लेनी चाहिए।

## उपचार (Treatment)

1. काटे गए स्थान को साबुन पानी से अच्छी तरह साफ करना चाहिए।
2. रोगी को rabies immunoglobulins द्वारा passive immunization किया जाना चाहिए।
3. सेडेटिव का इस्तेमाल करना चाहिए।

## नर्सिंग प्रबंधन (Nursing Management)

1. नर्स को रैबीज के रोगी का ईलाज करते समय गलबज, गाउन, मास्क आदि सुरक्षा उपकरण का उपयोग करना चाहिए।
2. उपयोग में लाए गए सभी उपकरणों व सामान को उचित विसंक्रमित विधि से नष्ट करना चाहिए।
3. निर्धारित समय पर रोगी को सभी टीके लगवाने के लिए कहना चाहिए।
4. रोगी को उचित स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करनी चाहिए।

Answer- Rabies is an infectious disease caused by rhabdovirus which

affects the central nervous system. It spreads through animal bites.

### Pathogen and Transmission:

The causative agent of rabies is rhabdo virus or lyssa virus. It is spread by biting by animals or quadrupeds, it can be by monkey, dog, cat, wolf etc.

### Incubation Period –

Its incubation period can be 1-3 months. It depends on the age of the victim and the place of bite.

### Symptoms (Clinical Features) -

#### 1. Primary Phase

- Local or radiating pain
- Tingling at bite site
- Pruritus
- Mild fever
- Irritability
- Problem with light (Photophobia)
- Sensitivity to loud noises
- Dilation of pupil
- Tachycardia

2. Excitation Phase – These appear within 2-10 days of the initial symptoms-

- Excessive agitation
- Excessive restlessness
- Paralysis
- Irregular heartbeat
- Fever
- Fear of water (Hydrophobia)
- Dehydration
- Difficulty swallowing (Dysphagia)
- Excessive salivation
- The patient has seizures

3. Terminal Phase

- Paralysis
- Prolonged Coma
- Death

Diagnosis

- Virus isolation
- Blood investigations
- Urine examination

## Prevention

1. Stray dogs should be vaccinated to prevent rabies.
2. If a dog bites a person, it must be kept under observation for 10 days.
3. If any animal has symptoms of rabies, it should be kept in isolation immediately.
4. In case of animal bite, vaccination should be done immediately and later a booster dose should also be taken.

## Treatment

1. The bitten area should be cleaned thoroughly with soap water.
2. The patient should be given passive immunization by rabies immunoglobulins.
3. Sedative should be used.

## Nursing Management

1. The nurse should use protective equipment like gloves, gown, mask etc. while treating a rabies patient.
2. All used instruments and equipment should be destroyed by proper disinfection method.
3. The patient should be asked to get all the vaccinations at the scheduled time.



4. Proper health education should be provided to the patient.

Q. हैजा या कॉलेरा क्या है? इसके कारक, प्रसार व उद्भवन अवधि लिखिए।

इसके चिकित्सीय लक्षण, निदान, रोकथाम, उपचार व नर्सिंग प्रबंधन लिखिए।

What is cholera? Write its pathogen, transmission and incubation period.

Write the clinical features, diagnosis, treatment, prevention and nursing care of it.

उत्तर- हैजा या कॉलेरा (Cholera)

हैजा एक संक्रामक रोग है जिसमें acute gastrointestinal संक्रमण होने से अत्यधिक दस्त एवं उल्टी होने से गम्भीर निर्जलीकरण (dehydration) हो जाता है।

कारण (Pathogen) -

हैजा रोग vibrio cholera जीवाणु द्वारा होता है।

प्रसार (Transmission)

हैजा मुख-मल मार्ग (Oral-fecal route) द्वारा प्रसारित होता है।

यह दूषित पानी, दूषित भोजन, अस्वच्छ हाथ, मक्खियों द्वारा व रोगी से सम्पर्क आदि द्वारा फैल सकता है।

उद्भवन काल (Incubation Period)

इसका उद्भवन काल निश्चित नहीं होता है यह कुछ घंटों से एक सप्ताह तक हो सकता है।

## लक्षण (Clinical Features)

- चावल के पानी समान दस्त होना (Watery stool)
- बार-बार दस्त जाना (Frequency of diarrhoea)
- गम्भीर निर्जलीकरण (Severe dehydration)
- पेट में मरोड़ या ऐंठन (Abdominal cramps)
- अत्यधिक कमजोरी आना (Severe weakness)

## निदान (Diagnosis) -

- शारीरिक परीक्षण (Physical examination)
- लक्षणों की उपस्थिति की जाँच (Presence of clinical features)
- रक्त की जाँच (Blood examination)
- मूत्र परीक्षण (Urinalysis)
- मल-परीक्षण (Stool examination)

## रोकथाम (Prevention) -

1. हैजे की रोकथाम के लिए स्वच्छ जलापूर्ति सुनिश्चित होनी चाहिए।
2. पानी को स्वच्छ बनाने के लिए क्लोरीन एवं लाल दवा का प्रयोग करना चाहिए।
3. मक्खियों पर नियंत्रण हेतु उचित उपाय किए जाने चाहिए।
4. सदैव भोजन करने से पूर्व साबुन से अच्छी तरह हाथ धोने चाहिए।

## उपचार (Treatment)

## 1. Rehydration -

हैजे के उपचार का प्रथम लक्ष्य शरीर में hydration एवं electrolytes के संतुलित स्तर को बनाए रखना होता है इसके लिए पर्याप्त मात्रा में तरल, ORS (Oral Rehydration Solution) घोल पिलाया जाता है व LV. fluids दिए जाते हैं।

2. Antibiotics - रोगी को antibiotics भी दिए जाते हैं जैसे- Tetracycline, ampicillin आदि।

3. रोगी का लाक्षणिक प्रबंधन भी किया जाता है एवं आवश्यकतानुसार दवाईयां दी जाती हैं जैसे- Antiemetics, antidiarrheal, antispasmodics आदि।

4. रोगी में पोटेशियम स्तर को सही करने के लिए सोडियम लेक्टेट (Ringer's lactate या RL solution) I.V. administer किया जाता है।

## नर्सिंग प्रबंधन (Nursing Management) -

1. बालक का intake-output chart maintain करना चाहिए।

2. बालक को आरामदायक स्थिति प्रदान करनी चाहिए।

3. बालक की व्यक्तिगत स्वच्छता बनाए रखनी चाहिए व इसमें माता-पिता को सम्मिलित करना चाहिए।

4. बालक को सभी दवाईयां उचित समय पर देनी चाहिए।

5. माता-पिता को उचित स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करनी चाहिए।

Answer- Cholera is an infectious disease in which acute gastrointestinal infection occurs.

Excessive diarrhea and vomiting leads to severe dehydration.

Cause (Pathogen) -

Cholera disease is caused by *Vibrio cholera* bacteria.

Transmission Cholera is transmitted by the oral-fecal route.

It can spread through contaminated water, contaminated food, unclean hands, flies and contact with the patient etc.

Incubation Period: Its incubation period is not fixed, it ranges from a few hours to a week. It is possible

Clinical Features

- Watery stool
- Frequency of diarrhea
- Severe dehydration
- Abdominal cramps
- Severe weakness

Diagnosis -

- Physical examination
- Presence of clinical features
- Blood examination
- Urinalysis

- Stool examination

#### Prevention -

1. To prevent cholera, clean water supply should be ensured.
2. To make water clean, chlorine and red medicine should be used.
3. Appropriate measures should be taken to control flies.
4. Always wash hands thoroughly with soap before eating

#### Treatment

1. Rehydration - The first goal of treatment of cholera is to maintain the balanced level of hydration and electrolytes in the body. For this, adequate amount of fluid, ORS (Oral Rehydration Solution) solution is given and LV. fluids are given.
2. Antibiotics – Antibiotics are also given to the patient like Tetracycline, ampicillin etc.
3. Symptomatic management of the patient is also done and medicines are given as per requirement like antiemetics, antidiarrheal, antispasmodics etc.
4. Sodium lactate (Ringer's lactate or RL solution) I.V. to correct the potassium level in the patient. is administered.

#### Nursing Management -

1. The child's intake-output chart should be maintained.
2. The child should be provided with comfortable conditions.

3. Personal hygiene of the child should be maintained and parents should be involved in this.
4. All medicines should be given to the child at the appropriate time.
5. Parents should provide proper health education.

**Q. चिकनपॉक्स या छोटी माता क्या है? इसके कारक, प्रसार व लक्षण लिखिए।**

**अतिसार का निदान, जटिलताएं, रोकथाम, उपचार व नर्सिंग प्रबंधन लिखिए।**

**What is chickenpox? Write its pathogen, transmission and symptoms.**

**Write the diagnosis, complications, treatment, prevention and nursing care of chickenpox.**

**उत्तर- छोटी माता या चिकनपॉक्स (Chickenpox)**

यह vericella zoster नामक वाइरस जनित संक्रामक रोग है जिसमें शरीर में दाने बन जाते हैं।

**रोगकारक व प्रसार (Pathogen and Transmission) -**

छोटी माता का रोग कारक वैरीसेला जोस्टर (vericella zoster) नामक वाइरस होता है। यह प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष संपर्क, ड्रॉपलेट संक्रमण या Fomites द्वारा फैलती है।

**प्रभावित आयु वर्ग (Affected age group)**

- यह किसी भी आयु में हो सकती है परंतु 2-8 वर्ष की आयु में अधिक होती है।

**उद्भवन काल (Incubation period)**

इसका अवधि 14-21 दिन की होती है कई बार इसे 13-17 दिन भी माना जाता है।

## लक्षण (Clinical Features)

बालक में निम्न लक्षण क्रमिक रूप में प्रकट होते हैं-

- हल्का बुखार
- भूख न लगना
- लाल रंग के खुजलीदार निशान बनना

## निदान (Diagnosis)

- लक्षणों की उपस्थिति की जांच
- Vesicle fluid culture
- Serum antibody tests

## उपचार (Treatment) -

1. बालक का लाक्षणिक प्रबंधन किया जाना चाहिए जैसे- Antipyretics, antipruritics
2. बालक के शरीर पर calamine lotion लगाया जाता है।
3. बालक को यदि अन्य कोई संक्रमण हो तो एन्टिबायोटिक्स दी जाती हैं जैसे- Ciprofloxacin, amikacin आदि।
4. बालक को कई बार antiviral therapy भी दी जाती है जैसे- Acyclovir, adenine

## रोकथाम (Prevention)

1. सभी को चिकनपॉक्स के प्रति immunization करना चाहिए।
2. सभी fomites को नष्ट करना चाहिए।

## नर्सिंग प्रबंधन (Nursing Management) -

1. बालक का शरीर तापमान मापा जाता है।
2. डॉक्टर द्वारा निर्देशित दवाईयां दी जाती हैं।
3. बालक को रोग का पता चलते ही उसका isolation करना चाहिए।
4. बालक के दैनिक उपयोग की वस्तुएं अलग होनी चाहिए एवं उनका उचित विसंक्रमण किया जाना चाहिए।
5. बालक को पर्याप्त मात्रा में आराम देना चाहिए।

Answer:

Chicken pox is an infectious disease caused by a virus called varicella zoster in which rashes are formed in the body.

### Pathogen and Transmission –

The cause of chicken pox is a virus called varicella zoster. It is spread by direct, indirect contact, droplet infection or fomites.

### Affected age group

- It can occur at any age but is more common in the age group of 2-8 years.

### Incubation period:

Its duration is 14-21 days, sometimes it is also considered to be 13-17 days.



## Clinical Features:

The following symptoms appear sequentially in the child:

- mild fever
- loss of appetite
- formation of red itchy marks

## Diagnosis

- Checking for presence of symptoms
- Vesicle fluid culture
- Serum antibody tests

## Treatment -

1. Symptomatic management of the child should be done like- Antipyretics, antipruritics.
2. Calamine lotion is applied on the child's body.
3. If the child has any other infection, antibiotics are given like Ciprofloxacin, amikacin etc.
4. Many times the child is also given antiviral therapy like Acyclovir, adenine.

## Prevention

1. Everyone should be immunized against chickenpox.

2. All fomites must be destroyed.

Nursing Management -

1. The child's body temperature is measured.
2. Medicines are given as directed by the doctor.
3. The child should be isolated as soon as the disease is detected.
4. The items of daily use of the child should be separate and they should be properly disinfected.
5. The child should be given adequate amount of rest.

Q. डेंगू क्या है? इसके कारक, प्रसार व उद्भव अवधि लिखिए।

इसके चिकित्सीय लक्षण, निदान, रोकथाम, उपचार व नर्सिंग प्रबंधन लिखिए।

**What is dengue? Write its pathogen, transmission and incubation period.**

**Write the clinical features, diagnosis, treatment, prevention and nursing care of dengue.**

उत्तर- डेंगू (Dengue) -

डेंगू एडीस एजेप्टाई (aedes aegypti) मच्छर वाहित संक्रामक रोग है जो डेंगू वाइरस द्वारा उत्पन्न होता है। इसे हड्डी तोड़ बुखार (break bone fever) भी कहते हैं।

रोगकारक (Pathogen) -

डेंगू ज्वर का रोग कारक डेंगू वाइरस होता है जो RNA प्रकार का वाइरस होता है।

डेंगू का वाहक मादा एडीस मच्छर होती है इसकी प्रमुख प्रजातियाँ एडीस एजेप्टाई (aedes

aegypti) एवं एडीस एल्बोपिक्टस (aedes albopictus) होती है। यह मच्छर प्रायः दिन के समय ही काटता है।

चिकित्सीय लक्षण (Clinical Features) - डेंगू में तीन स्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं-

1. डेंगू बुखार (Dengue fever)
2. डेंगू रक्तस्रावी बुखार (Dengue haemorrhagic fever)
3. डेंगू आघात सिंड्रोम (Dengue shock syndrome)

1. डेंगू बुखार (Dengue Fever) - इसमें निम्न लक्षण प्रकट होते हैं-

- तेज बुखार (High fever)
- सिरदर्द (Headache)
- अस्थियों एवं संधियों में दर्द
- कमजोरी (Weakness)
- जी घबराना एवं उल्टी होना (Nausea and vomiting)

2. डेंगू रक्तस्रावी बुखार (Dengue Haemorrhagic Fever)

- बुखार (Fever)
- शरीर पर लाल चकत्ते बनना (Purpura)
- नकसीर आना (Epistaxis)
- उल्टी में खून आना (Hematemesis)
- मल के साथ रक्त आना (Melena)

### 3. डेंगू शॉक सिंड्रोम (Dengue Shock Syndrome)

- डेंगू बुखार एवं रक्तस्राव की गंभीर स्थिति के कारण आघात
- रक्तचाप कम हो जाना
- हाथ-पैर ठंडे पड़ जाना
- रोगी की मानसिक स्थिति कमजोर हो जाना
- बेहोशी छाना

### निदान (Diagnosis)

- लक्षणों की उपस्थिति की जाँच
- रक्त जांच प्लेटलेट संख्या व WBC
- एलिसा (ELISA) परीक्षण
- मूत्र परीक्षण (Urine examination)

### उपचार (Treatment)

1. बालक को आवश्यकतानुसार antipyretics दी जाती हैं जैसे- Paracetamol
2. बालक को आवश्यकतानुसार analgesics दी जाती हैं परंतु एस्पिरिन नहीं दी जानी चाहिए।
3. बालक को आवश्यकतानुसार I.V. fluids एवं electrolytes दिए जाते हैं।
4. बालक का गंभीर स्थिति में ब्लड व प्लेटलेट ट्रांसफ्यूजन भी किया जाता है।
5. बालक को antihemorrhagic drugs दी जाती हैं।

### नर्सिंग प्रबंधन (Nursing Management) -

1. बालक को पूर्ण आराम प्रदान करना चाहिए।
2. बालक को पर्याप्त मात्रा में तरल पदार्थ लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
3. बालक के जैविक चिन्ह निरंतर रूप से चेक करने व रिकॉर्ड करने चाहिए।
4. डॉक्टर के निर्देशानुसार सभी दवाईयां समय पर देनी चाहिए।
5. बच्चे की तीव्र बुखार में कोल्ड स्पॉजिंग करनी चाहिए।
6. बालक का intake-output chart maintain करना चाहिए।
7. किसी भी जटिलता की स्थिति में डॉक्टर को तुरंत सूचित करना चाहिए।

Answer- Dengue -

Dengue is a mosquito-borne infectious disease caused by dengue virus. It is also called break bone fever.

Pathogen –

The causative agent of dengue fever is dengue virus which is an RNA type virus.

The carrier of dengue is the female Aedes mosquito, its main species are Aedes aegypti and Aedes albopictus.

This mosquito usually bites during the day time only.

Clinical Features - Three conditions can arise in dengue-

1. Dengue fever
2. Dengue haemorrhagic fever

### 3. Dengue shock syndrome

#### 1. Dengue Fever - In this the following symptoms appear-

- High fever
- Headache
- pain in bones and joints
- Weakness
- Nausea and vomiting

#### 2. Dengue Haemorrhagic Fever

- Fever
- Formation of red rashes on the body (Purpura)
- Epistaxis
- Blood in vomit (Hematemesis)
- Blood in stool (Melena)

#### 3. Dengue Shock Syndrome

- Stroke due to severe dengue fever and bleeding.
- Decreased blood pressure
- Cold hands and feet
- Weakening of the mental condition of the patient.

- fainting

## Diagnosis

- Checking for presence of symptoms
- Blood test platelet count and WBC
- ELISA test
- Urine examination

## Treatment

1. Antipyretics are given to the child as per requirement like- Paracetamol
2. Analgesics are given to the child as per requirement but aspirin should not be given.
3. Give I.V. to the child as per requirement. Fluids and electrolytes are given.
4. Blood and platelet transfusion is also done in critical condition of the child.
5. The child is given antihemorrhagic drugs.

## Nursing Management -

1. The child should be provided complete rest.
2. The child should be encouraged to take adequate amount of fluids.
3. The biological signs of the child should be continuously checked and

recorded.

4. All medicines should be given on time as per the doctor's instructions.
5. Cold sponging should be done in case of acute fever of the child.
6. The child's intake-output chart should be maintained.
7. In case of any complication, the doctor should be informed immediately.

**Q. बाल शोषण किसे कहते हैं? इसके कारण एवं प्रबंध का वर्णन करो।**

**What is child abuse? Describe its causes and treatment.**

**उत्तर - बाल शोषण (Child Abuse) -**

अभिभावकों, माता-पिता, रिश्तेदार या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा बच्चे के शारीरिक, लैंगिक, भावनात्मक या मानसिक विकास के लिए दुर्व्यवहार करना बाल शोषण या बाल प्रताड़ना कहलाता है।

**बालशोषण के कारण (Causes of Child Abuse)**

- परिवारिक झगड़े
- परिवार में तनाव
- मानसिक रोग
- अवांछित गर्भधारण
- गरीबी

**शोषण के चेतावनी चिन्ह (Warning Signs of Abuse)**



- पूर्व की चोट के निशान अथवा चोट के घाव
- खरोंच
- दांत के काटने के निशान
- जलने के निशान
- सिर में चोटों के निशान
- चोटों के इलाज के लिए बार-बार स्वास्थ्य केन्द्र आना
- यौन शोषण में त्वचा, मुख, मलद्वार, बाह्य जननांगों पर चोटों के निशान।

शोषित बच्चों में प्रवृत्तियाँ (Trends in Abused Child) -

- अस्वीकार्यता (Rejection)
- भयभीत रहना
- आक्रामक व्यवहार करना
- बिस्तर गोला करना
- शैक्षणिक प्रदर्शन में अचानक कमी आना
- बार-बार मूत्र मार्ग संक्रमण होना
- समस्याग्रस्त स्वभाव
- आदतन रोना
- मानसिक अवभेदन

प्रबंध (Management)

1. शारीरिक चोटों व संक्रमण के लिए चिकित्सीय उपचार कराना।

2. अन्य स्वास्थ्य समस्याओं का लाक्षणिक उपचार कराना।
3. प्रताड़ना व शोषण का शक होने पर कानूनी कार्यवाही के लिए पुलिस को सूचित करना।
4. अगर शोषण घर के किसी सदस्य द्वारा किया गया है तो बालक को उससे दूर रखना।
5. आवश्यक कार्यवाही हेतू महिला एवं बाल आयोग को सूचित करना।
6. बच्चे को भविष्य में शोषण से बचाने हेतू आवश्यक उपाय करने चाहिए।

Answer – Child Abuse – Abuse of a child by guardians, parents, relative or any other person.

Abuse for physical, sexual, emotional or mental development is called child abuse or child abuse.

### Causes of Child Abuse

- Family feuds
- tension in the family
- mental illness
- unwanted pregnancy
- poverty

### Warning Signs of Abuse

- Scars or wounds from previous injuries.
- rash
- Bite marks of teeth

- burn marks
- head injury marks
- Repeated visits to the health center for treatment of injuries
- Injuries on skin, mouth, anus, external genitalia due to sexual abuse.

#### Trends in Abused Child -

- Rejection
- to be afraid
- behave aggressively
- bed roll
- sudden decline in academic performance
- frequent urinary tract infections
- problematic temperament
- habitual crying
- mental breakdown

#### Management

1. To seek medical treatment for physical injuries and infections.
2. To get symptomatic treatment of other health problems.
3. If there is suspicion of harassment and exploitation, to inform the police for legal action.
4. If the abuse has been done by any member of the family, then keep

the child away from him.

5. To inform the Women and Children Commission for necessary action.

6. Necessary measures should be taken to protect the child from exploitation in future.

**Q. शय्यामूत्रण या बिस्तर गीला करने से आपका क्या आशय है? समझाइए।**

**What do you mean by enuresis or bed wetting? Explain**

**उत्तर-** शय्यामूत्रण या बिस्तर गीला करना (Enuresis or bed wetting)

पाँच वर्ष की आयु से अधिक के बच्चे यदि बिस्तर गीला करते हैं तो उसे शय्यामूत्रण या बिस्तर गीला करना कहते हैं।

यह अधिकतर बच्चों में पायी जाने वाली एक सामान्य सी समस्या है।

**कारण (Causes) -** इसके अनेक कारण हो सकते हैं, जो निम्नलिखित हैं-

- अपर्याप्त टॉयलेट ट्रेनिंग
- मूत्र-तंत्र संक्रमण
- पाचन क्रिया सही न होना
- सोते समय अधिक तरल पदार्थ पीना
- मधुमेह
- भावनात्मक दबाव जैसे- परिवार में कलह, माता-पाता का अधिक सख्त होना

**प्रबंधन (Management)**

1. तंत्रीय कारण पता लगाकर उसका उपचार करें जैसे- मधुमेह, मूत्र मार्ग संक्रमण आदि।

2. बच्चे को सोने से पहले तरल पदार्थ नहीं देने चाहिए।
3. रात्रि में बच्चे को जगाकर मूत्र त्याग अवश्य करवाना चाहिए।
4. बच्चा किस समय शय्यामूत्रण करता है. और उसकी नींद किस प्रकार की है इसका विश्लेषण करना चाहिए।
5. बच्चे के बिस्तर गीला करने पर उसे सजा देना व उपहास करने से बचना चाहिए।
6. अगर बच्चा बिस्तर गीला न करे तो उसकी प्रशंसा करनी चाहिए।
7. मूत्र की धार को बार-बार रोकने वे छोड़ने का अभ्यास करवाए।
8. औषधियों का प्रयोग भी किया जाता है जैसे- desmopressin रात को सोते समय व imipramine सोने से एक घंटा पहले।

Answer: Enuresis or bed wetting. If children above the age of five years wet the bed, it is called enuresis or bed wetting. This is a common problem found in most children.

Causes - There can be many reasons for this, which are as follows-

- inadequate toilet training
- urinary tract infection
- poor digestion
- drinking more fluids at bedtime
- diabetes
- Emotional pressure like discord in the family, parents being too strict

Management

1. Find out the systemic cause and treat it like diabetes, urinary tract infection etc.
2. Liquids should not be given to the child before sleeping.
3. The child must be woken up at night to urinate.
4. At what time does the child do bedwetting? And what type of sleep he has should be analyzed.
5. One should avoid punishing and ridiculing the child for bed wetting.
6. If the child does not wet the bed, he should be praised.
7. Make them practice stopping the stream of urine repeatedly and releasing it.
8. Medicines are also used like desmopressin at night and imipramine one hour before sleeping.

**Q. नींद में चलना किसे कहते हैं?**

**What is somnambulism?**

**उत्तर-** नींद में चलना (Somnambulism)

नींद में चलना या स्लीपवाकिंग एक विचित्र प्रकार की गम्भीर मनोवैज्ञानिक बीमारी है जो कि कुछ ही लोगों में पायी जाती है इसे सोमनाबुलिज्म या स्लीपिंग डिसऑर्डर भी कहा जाता है। इस रोग में बालक नींद में चलने लगता है।

इस बीमारी से ग्रसित रोगी रात में नींद से उठकर अपने बिस्तर से चलता है और एक जागे हुए मनुष्य की तरह विभिन्न कार्य को आसानी से कर देता है।

**स्लीपवाकिंग के लक्षण (Symptoms of Somnambulism) - स्लीपवाकिंग के लक्षण निम्नलिखित हैं-**

1. इसमें बच्चा अपनी इच्छा से गतिविधि करता है।
2. कुछ लोग नींद में बिस्तर पर ही बैठ जाते हैं और अपने पैर हिलाते रहते हैं और कई कार्य करते हैं जैसे- भोजन करना या टॉयलेट में जाकर मूत्र त्याग करना आदि।
3. बच्चा नींद में चलते समय भी गहरी नींद में ही होता है और उसे अपनी उस स्थिति का अहसास तक नहीं होता क्योंकि नींद में चलते वक्त भी उसकी आँखें खुली रहती हैं।
4. बच्चे का चेहरा एकदम भावहीन रहता है। उसे जगाना असम्भव नहीं मगर बहुत कठिन है।
5. बच्चा नींद में आस-पास की चीजों से टकरा कर घायल हो सकता है। वह अपने आस-पास हो रही बातचीत पर ध्यान नहीं देता है। यदि उसका नाम लेकर पुकारा जाए, जब भी वह कोई प्रतिक्रिया नहीं देता।

#### उपचार (Treatment)

1. सोने से पहले घर के सभी खिड़की दरवाजे अच्छी तरह से बंद कर दें और मुख्य द्वार पर ताला लगा दें। उसकी चाबी छिपाकर रखें।
2. यदि घर में खिड़कियाँ नीची हैं तो उन्हें अच्छी तरह से लॉक कर दें।
3. बेडरूम के डोर नॉब के साथ एक ऑटोमेटिक अलार्म लगा दें ताकि दरवाजा खुलने पर अलार्म बज उठेगा। इससे संभावित दुर्घटना से बचा जा सकता है। घर में बाहर निकली हुई कोई नुकीली वस्तु न हो जिससे टकराकर घायल हो जाए।
4. बच्चे को चिकित्सक को दिखाएं।

#### Answer - Sleep Walking (Somnambulism)

Sleep walking or sleepwalking is a strange type of serious psychological illness which is found in only a few people.

It is also called somnambulism or sleeping disorder.

In this disease the child starts walking in his sleep. The patient

suffering from this disease wakes up from sleep at night, walks from his bed and does various tasks easily like a waking person.

Symptoms of Somnambulism - Symptoms of sleepwalking are as follows-

1. In this the child does the activity as per his wish.
2. Some people sit on the bed while sleeping and keep moving their legs and do many things like eating food or going to the toilet to urinate etc.
3. Even while walking in sleep, the child is still in deep sleep and he is not even aware of his state because sleep

His eyes remain open even while walking.

4. The child's face remains completely expressionless. It is not impossible to wake him up but it is very difficult.
5. The child may get injured by colliding with nearby objects while sleeping. He does not pay attention to the conversations happening around him. Whenever his name is called, he does not respond.

Treatment

1. Before sleeping, close all the windows and doors of the house properly and lock the main door. Keep its key hidden.
2. If the windows in the house are low, then lock them properly.
3. Attach an automatic alarm to the bedroom door knob so that the alarm will go off when the door is opened.

This can avoid possible accidents. There should not be any sharp object protruding in the house which could collide with it and cause



injury.

4. Show the child to the doctor.

**Q. प्रोटीन ऊर्जा कुपोषण को परिभाषित कीजिए।**

**Define protein energy malnutrition (PEM).**

**उत्तर-** प्रोटीन ऊर्जा कुपोषण [Protein Energy Malnutrition (PEM)] -

यह वह चिकित्सकीय स्थिति होती है जो प्रोटीन की कमी व ऊर्जा की अपर्याप्तता के फलस्वरूप होती है। यह कुपोषण दो प्रकार का होता है-

1. क्वाशिओरकर (Kwashiorkor)

2. मरासमस या सूखा रोग (Marasmus)

बालक के जन्म से किशोरावस्था तक उसका तीव्र काल होता है। अतः इस अवस्था में उसे विभिन्न पोषकों की अधिक आवश्यकता होती है। इनमें कमी उपयुक्त स्थिति पैदा कर सकती है।

**Answer-** Protein Energy Malnutrition (PEM) –

This is the medical condition.

Which occurs as a result of protein deficiency and energy insufficiency.

There are two types of malnutrition-

1. Kwashiorkor

2. Marasmus

There is an intense period from the birth of a child till adolescence.

Therefore, in this stage he needs more nutrients. Deficiency in these can create suitable conditions.

**Q. मरासमस या सूखा रोग क्या है? मरासमस रोग के कारण, लक्षण, सिंग प्रबंधन समाइए।**

**What is Marasmus? Describe the causes, symptom and nursing management of marasmus disease.**

**उत्तर- मरासमस (Marasmus)**

मरासमस कुपोषण का ऐसा प्रकार है जो अपर्याप्त कैलोरी उपभोग के परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है।

इसमें पेशियों की गम्भीर क्षति तथा उपत्वचीय वसा की गम्भीर कमी से बालक सूखा-सूखा लगता है।

यह सामान्यतः प्रथम वर्ष की आयु में प्रारंभ होता है तथा किशोरावस्था तक भी हो सकता है।

Marasmus



**लक्षण (Symptoms) -**

- वजन में कमी।
- पेशियों एवं उपत्वचीय वसा की गम्भीर क्षति के कारण त्वचा में झुर्रियां पड़ना।
- गाल, आँख आदि धंस जाते हैं जिससे बन्दर वृद्ध आदमी जैसी शक्ल हो जाती है।
- हड्डियाँ व अंगों के जोड़ दिखने लगते हैं।
- पेट नौकाकार हो जाता है।
- बालक चिड़चिड़ा, भूखा तथा हमेशा खाने को आतुर रहता है किन्तु बाद में सुस्त रहता है तथा

खाना बन्द कर देता है।

- शरीर की उपापचयी दर घटी हुई व शारीरिक तापमान व रक्तदाब सामान्य से कम हो जाता है।
- त्वचा शुष्क व संक्रमण के लिए संवेदी हो जाती है, जिससे संक्रमण भी हो जाते हैं।
- त्वचा का रंग भूरा व त्वचा सूखी एवं खुरदरी हो जाती है तथा एनीमिया हो जाता है। त्वचा में pyoderma जैसे संक्रमण रोग हो सकते हैं।

कारण (Causes) -

- अपर्याप्त स्तनपान, अपर्याप्त भोजन, लम्बे समय तक पतला दूध एवं पतला आहार लेना।
- अन्धविश्वास व अज्ञानता के कारण समय पर weaning शुरू नहीं करना एवं कम मात्रा में देना।
- दीर्घावधि से टी.बी., न्यूमोनिया, दस्त, उल्टी, मीजल्स (measles) आदि बीमारियाँ होना।
- जन्मजात बीमारियाँ जिसके कारण बालक का पर्याप्त भोजन न ले पाना जैसे cleft lip, cleft palate, पायलोरिक स्टेनोसिस, हर्निया, हाइड्रोसिफिलस।
- भोजन एलर्जी (Food allergy)
- उपरोक्त कारकों के कारण बालक को उसकी उम्र के अनुसार उपयुक्त ऊर्जा प्राप्त नहीं होती है।

नर्सिंग प्रबन्धन (Nursing Management)

A. उपयुक्त व पर्याप्त आहार देकर कमियों को ठीक करना

1. सम्पूर्ण पोषक तत्वों तथा प्रोटीन व ऊर्जा युक्त संतुलित आहार देना चाहिए।
2. क्वाशिओरकर में प्रोटीन प्रचुर मात्रा में तथा मरासमस वाले बच्चे को अधिक वसा (कैलोरी) युक्त आहार देना चाहिए।

3. शुरूआत में कम सान्द्रता वाला भोजन देना चाहिए तथा धीरे-धीरे इसकी सान्द्रता बढ़ाते रहना चाहिए।
4. भोजन को विभाजित कर समय अन्तराल में थोड़ा-थोड़ा देना चाहिए।
5. भोजन में पोषक पदार्थ जैसे दालें, छाछ, सोयाबीन, मूँगफली, केला, सब्जियाँ, फल, दूध आदि को शामिल करना चाहिए।
6. बालक के द्वारा आहार मुख से नहीं लिया जा रहा हो तो उसे ryles tube से तरल पदार्थ देना चाहिए।
7. बालक का नियमित वजन नापकर स्थिति में सुधार का अवलोकन करना चाहिए।

#### B. संक्रमणों पर नियंत्रण

1. बालक को उल्टी-दस्त व अन्य संक्रमण है तो तुरन्त औषधि देनी चाहिए तथा निर्जलीकरण से बचाना चाहिए।
2. प्रोटीन-ऊर्जा से युक्त प्रचुर आहार देने पर दस्त व distention हो सकता है। अतः आहार थोड़ा-थोड़ा देना चाहिए।
3. कृमिजन्तु बाधा का कृमिरोधी दवाएँ देकर उपचार करते हैं।

#### C. अन्य -

1. व्यक्तिगत स्वच्छता व त्वचा की देखरेख करनी चाहिए।
2. बच्चे को पर्याप्त आराम व मनोरंजन प्रदान कर ऊर्जा संग्रहित करें।

Answer: Marasmus

Marasmus is a type of malnutrition that occurs as a result of inadequate calorie consumption.

In this, due to severe muscle damage and severe deficiency of subcutaneous fat, the child looks emaciated.

It usually starts in the first year of age and can continue till adolescence.

### Symptoms -

- Weight loss.
- Wrinkling of the skin due to severe damage to muscles and subcutaneous fat.
- Cheeks, eyes etc. sink due to which the monkey looks like an old man.
- The joints of bones and organs become visible.
- The stomach becomes boat shaped.
- The child is irritable, hungry and always eager to eat, but later becomes lethargic and stops eating.
- The body's metabolic rate decreases and body temperature and blood pressure become lower than normal.
- The skin becomes dry and susceptible to infection, which also leads to infections.
- The skin color becomes brown and the skin becomes dry and rough and anemia occurs. Skin infections like pyoderma may occur.

### Causes -

- Inadequate breastfeeding, inadequate food, taking thin milk and thin diet for a long time.

- Due to superstition and ignorance, not starting weaning on time and giving less quantity.
- Having long term diseases like TB, pneumonia, diarrhoea, vomiting, measles etc.
- Congenital diseases due to which the child is not able to take adequate food like cleft lip, cleft palate, pyloric stenosis, hernia, hydrocephalus.
- Food allergy
- Due to the above factors, the child does not get appropriate energy according to his age.

## Nursing Management

A. Correcting deficiencies by providing appropriate and adequate diet.

1. A balanced diet containing complete nutrients, protein and energy should be given.
2. Kwashiorkor should be given a diet rich in protein and high in fat (calories) to the child with marasmus.
3. In the beginning, low concentrated food should be given and gradually its concentration should be increased.
4. Food should be divided and given in small amounts at regular intervals.
5. Nutritious items like pulses, buttermilk, soybean, peanuts, banana, vegetables, fruits, milk etc. should be included in the diet.
6. If the child is not taking food orally, then he should be given fluids through a Ryles tube.

7. Improvement in the condition should be observed by measuring the child's weight regularly.

#### B. Control of infections

1. If the child has vomiting, diarrhea or other infections, he should be given medicine immediately and he should be protected from dehydration.

2. Giving protein-energy rich diet can cause diarrhea and distention. Therefore, food should be given little by little.

3. Helminthic infestation is treated by giving anti-worm medicines.

#### C. Others -

1. Personal hygiene and skin care should be taken care of.

2. Store energy by providing adequate rest and entertainment to the child.

**Q. क्वाशिओरकर को परिभाषित करें। क्वाशिओरकर रोग के कारण, लक्षण व नर्सिंग प्रबंधन समाइए।**

**Define Kwashiorkor. Describe the causes, symptoms and nursing management of Kwashiorkor disease.**

**उत्तर-** क्वाशिओरकर (Kwashiorkor) बालक के भोजन में प्रोटीन की न्यूनता जिसके साथ में कैलोरी न्यूनता भी जुड़ी होती है को क्वाशिओरकर कहते हैं। सामान्यतः यह 6 माह से 5 वर्ष की आयु के मध्य प्रकट होती है।

## Kwashiorkor



### लक्षण (Symptoms) -

- बालक सुस्त, अनमना, चिड़चिड़ा, कम सक्रिय एवं कमजोर हो जाता है।
- पूरे शरीर में सूजन जैसे- आँखों की पलकों, पेट, पैरों आदि में आ सकती है या किसी एक स्थान पर हो सकती है।
- शारीरिक वृद्धि रुक जाती है, पेशीय तानता (muscles tone) में कमी, पेशीय क्षय आदि पाए जाते हैं।
- बाल पतले. भूरे तथा गिरने लगते हैं।
- सीरम में एल्ब्यूमिन की कमी से hypoalbuminia हो जाता है।
- हृदय और यकृत वसीय परिवर्तनों के कारण बढ़ जाते हैं (Hepato and cardiomegaly)।
- बालक कमजोर हो जाता है जिससे बच्चों में अनेक संक्रमण हो जाते हैं जैसे डायरिया, उल्टी, खसरा, निमोनिया, विटामिन की कमी, एनीमिया इत्यादि।

### कारण (Causes) -

- बालक को लम्बे समय तक केवल स्तनपान करवाना व समय पर वीनिंग शुरू नहीं करना।
- अज्ञान एवं अंधविश्वास के कारण देर से वीनिंग एवं भोजन में केवल कार्बोहाइड्रेट्स देना जिससे खाने में प्रोटीन की कमी हो जाती है।



- आर्थिक स्थिति सही नहीं होने के कारण प्रोटीन की अनुपलब्धता।
- बच्चे को बार-बार संक्रमण तथा कृमि जन्तु बाधा होना।
- भावनात्मक असुरक्षा।

### उपचार (Treatment)

1. संतुलित एवं परिपूर्ण आहार
2. संक्रमण पर नियंत्रण
3. कमियों को ठीक करना

### नर्सिंग प्रबंधन (Nursing Management) -

1. बच्चे में संक्रमण एवं जंतुबाधा का उपचार करें।
2. स्तनपान को कम से कम 2 वर्ष तक प्रोत्साहन देना चाहिए।
3. कमी वाले पोषक तत्वों की पूर्ति करनी चाहिए।
4. यदि बच्चे में निर्जलीकरण की अवस्था हो तो उसका उपचार करें। शुरूआत में आधा दूध-आधा पानी मिलाकर दें व पांचवे दिन से पूर्ण दूध दें।
5. आहार में प्रोटीन एवं कैलोरी की मात्रा धीरे-धीरे बढ़ाएं।
6. संक्रमित रोगों से बचाने के लिए बच्चे का टीकाकरण करें।
7. पूरक विटामिन भी देने चाहिए।
8. माता-पिता को स्वास्थ्य संबंधी ज्ञान प्रदान करें।

Answer- Kwashiorkor: The deficiency of protein in a child's diet which is also associated with calorie deficiency is called kwashiorkor. Generally

it appears between the age of 6 months to 5 years.

### Symptoms -

- The child becomes lethargic, inflexible, irritable, less active and weak.
- Swelling can occur in the entire body like eyelids, stomach, legs etc. or can occur at one place.
- Physical growth stops, reduction in muscle tone, muscle wasting etc. are observed.
- Hair thin. They start turning brown and falling.
- Lack of albumin in serum causes hypoalbuminemia.
- Heart and liver become enlarged due to fatty changes (Hepato and cardiomegaly).
- The child becomes weak due to which many infections occur in children like diarrhea, vomiting, measles, pneumonia, vitamin deficiency, anemia etc.

### Causes -

- Exclusively breastfeeding the child for a long time and not starting weaning on time.
- Due to ignorance and superstition, late weaning and giving only carbohydrates in food due to which there is lack of protein in the food.
- Non-availability of protein due to poor economic conditions.
- The child has frequent infections and helminthic obstruction.
- Emotional insecurity.

## Treatment

1. Balanced and complete diet
2. Infection control
3. Correcting deficiencies

## Nursing Management -

1. Treat infection and bacterial infection in the child.
2. Breastfeeding should be encouraged for at least 2 years.
3. Deficient nutrients should be compensated.
4. If the child is dehydrated, treat it. Initially give a mixture of half milk and half water and from the fifth day give full milk.
5. Gradually increase the amount of protein and calories in the diet.
6. Vaccinate the child to protect him from infected diseases.
7. Supplemental vitamins should also be given.
8. Provide health related knowledge to parents.

**Q. मृदापाइका भक्षण किसे कहते हैं? इसके कारणों, जटिलताओं व प्रबंध का वर्णन करो।**

**What is geophagia (PICA)? Write its causes, complication and management.**

**उत्तर-** मृदापाइका भक्षण (PICA) अप्राकृतिक वस्तुओं जैसे मिट्टी, चाक, साबुन, क्रेयोन्स आदि को खाने की आदत को PICA अथवा Geophagia कहते हैं।

## कारण (Causes)

- कुपोषण (Malnutrition)
- रक्ताल्पता (Anaemia)
- विटामिन की कमी (Deficiency of vitamins)
- निम्न आर्थिक सामाजिक दशा (Low socio-economic condition)
- कृमि जंतुबाधा (Worm infestation)
- भावनात्मक रूप से विचलित बच्चे (Emotionally disturbed children)

## जटिलताएँ (Complications) -

- सीसा विषाक्तता (Lead Poisoning)
- दीर्घकालिक पेट दर्द (Chronic abdominal pain)
- चोट (Injury)
- कृमि संक्रमण (Worm infestation)
- बार-बार उल्टी करना (Recurrent vomiting)
- आंत्रीय अवरोध (Intestinal obstruction)

## प्रबंधन (Management)

1. संबद्ध समस्याओं जैसे- कृमि संक्रमण, कुपोषण आदि का पता लगाकर उपचार आरंभ करें।
2. बच्चे में रक्ताल्पता की जांच करवाएं।
3. अभिभावकों को स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करें व PICA से बच्चों को होने वाली जटिलताओं को समझाएं।

4. बच्चे को डांटने, सजा देने से बचे व उसे प्यार से समझाएं।
5. बच्चों के नाखून छोटे रखें व उस पर निगरानी बनाए रखें।

Answer- Soil Pika Eating (PICA) The habit of eating unnatural things like soil, chalk, soap, crayons etc. is called

PICA or Geophagia.

### Causes

- Malnutrition
- Anemia
- Deficiency of vitamins
- Low socio-economic condition
- Worm infestation
- Emotionally disturbed children

### Complications -

- Lead Poisoning
- Chronic abdominal pain
- Injury
- Worm infestation
- Recurrent vomiting
- Intestinal obstruction

## Management

1. Start treatment after finding out the associated problems like worm infection, malnutrition etc.
2. Get the child checked for anemia.
3. Provide health education to parents and explain the complications that PICA can cause to children.
4. Avoid scolding or punishing the child and explain it to him lovingly.
5. Keep children's nails short and keep a watch on them.

Q. टिक्स या पेशियां सिकुड़ने की आदत किसे कहते हैं? समझाइए।

**What is is Tics or Habit Spam? Describe it.**

उत्तर- टिक्स या पेशियां सिकुड़ने की आदत (Tics or Habit Spam)

पेशियों की अचानक होने वाली असामान्य, अनैच्छिक, उद्देश्यहीन, तीव्र व एकसमान गति Tic कहलाती है।

टिक्स मे सामान्यतः चेहरे, आंखें, सिर, गर्दन व कंधे की पेशियां सम्मिलित होती हैं।

यह सामान्यतः 5 से 10 वर्ष की आयु के बच्चों में पायी जाने वाली एक व्यवहारिक समस्या है।

इसके उदाहरण हैं- आंखें झपकाना (eye blinking), नाक सिकोड़ना, सिर घुमाना (head shaking) आदि।

टिक्स के प्रकार (Types of TICS) ये मुख्यतः दो प्रकार की होती हैं-

1. मोटर टिक्स (Motor Tics)

इसमें आंखें झपकाना, कंधे सिकोड़ना, मुंह बनाना, जीभ निकालना, नाक सिकोड़ना आदि शामिल हैं।

## 2. वॉकल टिक्स (Vocal Ticks)

इसमें गुर्राना, गला साफ करना, नाक से हवा खींचना, बड़बड़ाना आदि शामिल हैं।

## प्रबंधन (Management)

1. Tics को अधिक महत्व न देकर नजरअंदाज करना चाहिए।
2. Tics को रोकने का प्रयास, इसकी गंभीरता को बढ़ा देती है जिससे यह समस्या और भी लंबी हो जाती है। अतः इसे रोकने का प्रयास न करें।
3. चिकित्सक के निर्देशानुसार Haloperidol औषधि दी जाती है।

## Answer- Tics or habit of contracting muscles (Tics or Habit Spasm)

The sudden, abnormal, involuntary, purposeless, rapid and uniform movement of muscles is called Tic.

Tics commonly involve the muscles of the face, eyes, head, neck and shoulders.

This is a behavioral problem usually found in children between 5 to 10 years of age.

Its examples are eye blinking, wrinkling the nose, head shaking etc.

Types of TICS: These are mainly of two types-

### 1. Motor Tics:

This includes blinking eyes, shrugging shoulders, grimacing, sticking out tongue, wrinkling nose etc.

## 2. Vocal Ticks:

This includes growling, clearing the throat, sucking air through the nose, mumbling etc.

## Management

1. Tics should be ignored without giving much importance.
2. Attempting to stop tics increases its severity and prolongs the problem. So don't try to stop it.
3. Haloperidol medicine is given as per the doctor's instructions.

Q. मोटापा किसे कहते हैं? इसके कारण, प्रबंधन एवं नर्सिंग हस्तक्षेप का वर्णन करो।

What is obesity? Describe its causes, management and nursing interventions.

उत्तर- मोटापा (Obesity)

शरीर के ऊतकों में सामान्य से अधिक मात्रा में वसा इकट्ठा हो जाने के कारण शरीर का आकार बढ़ा हो जाता है. जिसे मोटापा कहते हैं।

## कारण (Causes)

- आनुवांशिकता
- अधिक मात्रा में कैलोरी युक्त भोजन से



- हायपोथायरॉइडिज्म (Hypothyroidism)
- एड्रिनल हाइपोकोर्टिकाइडिज्म
- व्यायाम न करना
- अधिक समय तक कम्प्यूटर पर बैठना
- गलत दिनचर्या
- डाउन सिन्ड्रोम
- दवाईयां जैसे- इंसुलिन, अवसादरोधी

### प्रबंधन (Management)

1. बच्चों के खाने में फल व सब्जियों का अधिक उपयोग करें।
2. फास्ट फूड जैसे- पिज्जा, बर्गर आदि खाने से परहेज करना चाहिए।
3. शारीरिक गतिविधि जैसे व्यायाम करना, आऊटडोर गेम खेलना आदि के लिए बच्चे को प्रेरित करना चाहिए।
4. कम कैलोरी एवं कम वसायुक्त भोजन बच्चों को देना चाहिए।
5. मीठे खाद्य पदार्थ जैसे आइसक्रीम, कोल्ड ड्रिंक्स, मिठाईयां आदि खाने से बचना चाहिए या कम मात्रा में इनका सेवन करना चाहिए।
6. भोजन को निश्चित मात्रा में व नियमित करने का प्रयास करें।
7. बच्चे व माता-पिता को संतुलित आहार व उसके लाभ की जानकारी प्रदान करें।
8. वजन कम करने के लिए आहार तालिका भी तैयार करें।
9. यदि वजन अधिक है एवं आहार संतुलन व परंपरागत तरीकों से कम नहीं हो रहा है तो शल्य क्रिया (bariatric surgery) भी की जाती है।

Answer- Obesity: Due to accumulation of more than normal amount of fat in the body tissues, the size of the body increases. Which is called obesity.

### Causes

- heredity
- from high calorie foods
- Hypothyroidism
- Adrenal hypocorticism
- not exercising
- sitting at computer for long periods of time
- wrong routine
- down syndrome
- Medicines like insulin, anti-depressants

### Management

1. Use more fruits and vegetables in children's diet.
2. One should avoid eating fast food like pizza, burger etc.
3. The child should be motivated for physical activity like exercising, playing outdoor games etc.
4. Low calorie and low fat food should be given to children.
5. Eating sweet foods like ice cream, cold drinks, sweets etc. should be avoided or consumed in small quantities.
6. Try to eat food in fixed quantity and regularly.

7. Provide information about balanced diet and its benefits to the child and parents.
8. Also prepare a diet table to lose weight.
9. If the weight is excessive and is not being reduced through balanced diet and traditional methods, then bariatric surgery is also done.

**Q. बाल अपराध किसे कहते हैं? समझाइए।**

**What is juvenile delinquency? Describe.**

**उत्तर-** बाल अपराध (Juvenile Delinquency)

18 वर्ष से छोटे बच्चों द्वारा सामाजिक या कानूनी अपराध अथवा गलत व्यवहार बाल अपराध कहलाता है।

हत्या जैसे जघन्य अपराधों में उम्र की सीमा 16 वर्ष है अर्थात् 16-18 वर्ष के बच्चों को वयस्क मानकर कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

**कारण (Causes)**

- बच्चे के प्रति उपेक्षित व्यवहार या प्यार में कमी
- वंशानुक्रम
- परिवार की आपराधिक प्रवृत्ति
- माता-पिता में से किसी एक या दोनों की कमी (मृत्यु या तलाक के कारण)
- गलत संगत
- अत्यधिक प्रेम
- गरीबी

- शराब व नशे की लत
- अशिक्षा
- राजनैतिक अपराधीकरण
- तकनीक का गलत उपयोग
- बाल शोषण

### प्रबंधन (Management)

1. माता-पिता को बच्चे के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करना चाहिए व बच्चों की आवश्यकताओं का ध्यान रखना चाहिए।
2. बच्चा अगर शैक्षणिक स्तर में कमजोर हो तो उसको सजा देने, डांटने या उपहास करने की जगह उसे समझदारी से समझाएं।
3. परिवारजनों को स्वयं अच्छा व्यवहार व्यक्त करके बच्चों के सामने एक अच्छा उदाहरण पेश करना चाहिए।
4. बच्चों की संगत व दोस्ती के बारे में जानकारी रखनी चाहिए कि कहीं वह गलत संगत के साथ तो नहीं है।
5. बच्चे को अपने आंतरिक गुस्से एवं विरोध को रचनात्मक व सकारात्मक रूप से व्यक्त करने हेतु प्रेरित करें।
6. बच्चे के आपराधिक व असामाजिक व्यवहार में संलिप्त होने पर उसे सुधारने हेतु बाल सुधार गृह एवं पुर्नवास केन्द्र में रखा जाना चाहिए।

Answer- Juvenile Delinquency:

Social or legal crime or wrong behavior committed by children below 18 years of age is called juvenile delinquency.

In heinous crimes like murder, the age limit is 16 years, that is, children

of 16-18 years of age will be treated as adults and legal action will be taken.

## Causes

- Neglectful behavior or lack of love towards the child.
- inheritance
- criminal tendencies of the family
- Loss of one or both parents (due to death or divorce)
- Wrong accompaniment
- extreme love
- poverty
- alcohol and drug addiction
- illiteracy
- political criminalization
- misuse of technology
- child abuse

## Management

1. Parents should treat children lovingly and take care of their needs.
2. If the child is weak in academics, then instead of punishing, scolding or ridiculing him, teach him wisely.
3. Family members should set a good example for their children by showing good behavior themselves.

4. One should be aware about the company and friendship of the children to see whether they are in bad company.
5. Motivate the child to express his inner anger and protest creatively and positively.
6. If a child is involved in criminal and anti-social behaviour, he should be kept in a child reform home and rehabilitation center for his correction.

**Q. एनोरेक्सिया नर्वोसा किसे कहते हैं? वर्णन करो।**

**What is anorexia nervosa? Explain.**

**उत्तर- एनोरेक्सिया नर्वोसा (Anorexia Nervosa) –**

यह खाने से संबंधित रोग है, जो सामान्य शरीर वजन के बने रहने का प्रतिषेध करता है तथा गम्भीर वजन क्षय द्वारा पहचाना जाता है।

**कारण (Causes) -**

- मोटापे का डर
- पारिवारिक तनाव
- मानसिक रोग जैसे- अवसाद
- अतिअनुशासित परिवार
- आनुवांशिकता

**लक्षण (Symptoms) -**

- वजन में कमी

- कब्ज
- रुखी त्वचा व मुहांसे
- कम मात्रा में भोजन ग्रहण करना
- दंत क्षरण
- कम रक्तचाप
- भंगुर नाखून व पतले बाल
- यौन सक्रियता नहीं
- थोड़ा खाने पर पेट भरने का अहसास

प्रबंध (Management) -

1. गंभीर कुपोषण को उचित पोषण द्वारा ठीक किया जाना चाहिए।
2. नियमित अंतराल पर बच्चे के जैविक चिन्ह व भार आदि का ऑकलन करना चाहिए।
3. मानसिक विकार से ग्रस्त होने पर बच्चे को मनोचिकित्सक को दिखाना चाहिए।
4. बालक एवं माता-पिता के बीच स्वस्थ संबंध व संतुलित व्यवहार होना चाहिए

Answer- Anorexia Nervosa – It is an eating disorder, which prevents the maintenance of normal body weight and is characterized by severe weight loss.

Causes -

- Fear of obesity
- Family stress
- Mental diseases like depression

- Highly disciplined family
- heredity

#### Symptoms -

- Weight loss
- Constipation
- Dry skin and acne
- Eating less food
- Dental caries
- low blood pressure
- Brittle nails and thin hair
- no sexual activity
- Feeling of fullness after eating a little.

#### Management -

1. Severe malnutrition should be corrected by proper nutrition.
2. The child's biological signs and weight etc. should be assessed at regular intervals.
3. If the child is suffering from mental disorder, he should be shown to a psychiatrist.
4. There should be a healthy relationship and balanced behavior between the child and the parents.